TITLE CODE : UPHIN50246

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लोक पहल

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी विशेष पेज-7

शाहजहाँपुर | वृहस्पतिवार | 07 सितम्बर 2023 | शाहजहाँपुर से प्रकाशित | वर्ष :2 | अंक :27 | पृष्ठ :8 | मूल्य 2 रुपये

21वीं सदी एशिया की सदी : नरेन्द्र मोदी

आसियान भारत की एक्ट ईस्ट पालिसी का अहम हिस्सा, आसियान-भारतीय शिखर सम्मेलन में बोले पीएम मोदी

नई दिल्ली एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 18वें पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन और 2वें आसियान-भारतीय शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए इंडोनेशिया पहुंचे। जकार्ता इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर प्रधानमंत्री का औपचारिक स्वागत किया गया।

आसियान-भारत शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आसियान भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी का केंद्रीय स्तंभ है। भारत की इंडो-पैसिफिक पहल में भी आसियान क्षेत्र का प्रमुख स्थान है। वैश्विक अनिश्चितताओं के माहौल में भी हर क्षेत्र में हमारे आपसी सहयोग में लगातार प्रगति हो रही है। आसियान-भारत शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि हमारी साझेदारी चौथे दशक में प्रवेश कर रही है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि वैश्विक विकास में आसियान क्षेत्र की अहम भूमिका है। वसुधैव कुटुंबकम, 'वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर' यही भावना भारत की जी-20 अध्यक्षता की थीम है। प्रधानमंत्री ने कहा कि 21वीं सदी एशिया की सदी है। मुझे विश्वास है कि आज हमारी बातचीत से भारत और आसियान क्षेत्र के भावी भविष्य को और सुदृढ़ बनाने के लिए नए संकल्प लिए जाएंगे। इंडोनेशिया के जकार्ता में आसियान-भारत शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि हमारा इतिहास और भूगोल भारत और आसियान को एकजुट करता है। इसके साथ ही, हमारे साझा मूल्य, क्षेत्रीय एकीकरण और शांति, समृद्धि और एक दुनिया में हमारा साझा विश्वास हमें एकजुट करता है। इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 20वें आसियान-भारत शिखर सम्मेलन और 18वें पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में भाग लेने से पहले भारतीय प्रवासी के सदस्यों से मुलाकात की।

इसके बाद पीएम मोदी जकार्ता के होटल पहुंचे, जहां पर भारतीय और इंडोनेशियाई समुदाय के लोगों ने सांस्कृतिक नृत्य करके उनका स्वागत किया। पीएम मोदी से हाथ मिलाने के लिए हर कोई उत्सुक था। वहीं, पीएम ने भी होटल में एकत्र हुए प्रवासी भारतीयों का अभिवादन किया।

सोनिया गांधी ने पीएम मोदी को लिखी चिट्ठी

संसद के विशेष सत्र में 9 मुद्दों पर की चर्चा की मांग

नई दिल्ली एजेंसी। कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर संसद के विशेष सत्र में आर्थिक स्थिति, किसान संगठनों के साथ समझौते, अडाणी समूह के खुलासे, जातीय जनगणना की मांग, संघीय ढांचे पर हमले, समेत नौ मुद्दों पर चर्चा का आग्रह किया है।

इस बारे में जानकारी देते हुए कांग्रेस सांसद जयराम रमेश ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के आवास पर 'इंडिया' गठबंधन के नेताओं की बैठक हुई। कांग्रेस नेता ने कहा कि हमने तय किया है कि हम संसद के विशेष सत्र का बहिष्कार नहीं करेंगे। यह हमारे लिए जनता के मुद्दों को सामने रखने का मौका है और हर पार्टी अलग-अलग मुद्दों को सामने रखने की पूरी कोशिश करेगी। पीएम मोदी को लिखी चिट्ठी में सोनिया गांधी ने लिखा कि हम निश्चित तौर पर सत्र में भाग लेना चाहते हैं। उन्होंने लिखा कि सत्र में सार्वजनिक महत्व के मुद्दे उठाने का मौका मिलेगा। उम्मीद है चर्चा और बहस के लिए समय दिया जाएगा। प्रधानमंत्री को लिखे पत्र में कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख ने उम्मीद जताई कि संसद के विशेष सत्र के दौरान विपक्ष द्वारा उठाए जाने वाले मुद्दों को रचनात्मक सहयोग की भावना के साथ लिया जाएगा। पत्र में उन्होंने कहा कि संसद के विशेष सत्र के लिए सरकार की ओर से अब तक कोई एजेंडा सूचीबद्ध नहीं किया गया है। सोनिया गांधी ने आग्रह किया कि 18 सितंबर से शुरू होने वाले संसद के विशेष सत्र के दौरान देश की आर्थिक स्थिति, जातीय जनगणना, चीन के साथ सीमा पर गतिरोध और अडानी समूह से जुड़े नए खुलासों की पृष्ठभूमि में संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) गठित करने की मांग समेत नौ मुद्दों पर उचित नियमों के तहत चर्चा कराई जाए।

श्रीरामचन्द्र मिशन व 'हार्टफुलनेस' संस्थान की पहल

उप्र में जन्माष्टमी पर 'हमारा हृदय ग्राम' अभियान का शुभारंभ

लोक पहल

शाहजहांपुर। श्रीरामचन्द्र मिशन के संस्थापक महात्मा रामचन्द्र जी महाराज का सपना था कि 'सहजमार्ग साधना पद्धति' का दीप हर घर और हर दिल में प्रकाशवान हो, उनके इस सपने को साकार करने के लिए मिशन के अध्यक्ष और 'हार्टफुलनेस मेडिटेशन' के ग्लोबल गाइड कमलेश डी पटेल पूरे मनोयोग से लगे हुए है। पिछले दिनों मध्य प्रदेश में 1 करोड़ 30 लाख लोगों को योग, प्राणायाम मुद्रा और ध्यान का सफलतापूर्वक प्रशिक्षण देने के बाद वैश्विक आध्यात्मिक संस्थान श्रीरामचन्द्र मिषन 'हार्टफुलनेस इंस्टीट्यूट' श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व पर सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में 'हमारा हृदय ग्राम' अभियान का शुभारंभ करने जा रहा है। पहले चरण में यह अभियान पूरे प्रदेश में एक साथ जन्माष्टमी पर आरंभ होकर एक वर्ष तक चलेगा।

इस अभियान के तहत हार्टफुलनेस संस्थान के सदस्य गांव-गांव जाकर लोगों को स्वच्छता, स्वास्थ्य, ध्यान और योग से होने वाले लाभों के प्रति जागरूक और प्रशिक्षित करेंगे। श्रीरामचन्द्र मिशन के उत्तर प्रदेश प्रभारी अनुपम अग्रवाल ने बताया कि उत्तर प्रदेश में कुल 822 विकास खण्ड हैं 'हमारा हृदय ग्राम' अभियान प्रथम चरण में 375 विकासखण्डों के 375 गांवो को शामिल किया गया है। इसके तहत विभिन्न विकासखण्डों के पांच गांवों को विकसित किया जायेगा। हार्टफुलनेस संस्थान के सदस्य हर गांव में एक सप्ताह तक लगातार भ्रमण कर ग्रामीणों को योग, ध्यान का प्रषिक्षण देंगे। 'हर हृदय ग्राम' से दो लोगों को श्रीरामचन्द्र मिशन के वैश्विक मुख्यालय कान्हा शांतिवनम तेलंगाना में प्रशिक्षण के लिए भेजा जाएगा। अभियान के दूसरे चरण में 1875 व तीसरे चरण में 9375, चौथे चरण 46875 और अन्तिम चरण में 140625 गांवों तक हर दिल ध्यान, हर दिन ध्यान, हर घर ध्यान, हमारा हृदय ग्राम अभियान को ले जाने का लक्ष्य है। शाहजहांपुर के जोन प्रभारी दीपक त्यागी ने बताया कि शाहजहांपुर में प्रथम चरण में विकासखण्ड कटरा, कांट, पुवायॉ के गांवों को चयनित किया गया है जहां अभियान का शुभारंभ किया जायेगा।

सफलता किसी बाहरी शक्ति की मोहताज नहीं: अनामिका यादव

पीसीएस (जे) परीक्षा में एसएस लॉ कालेज की अनामिका का प्रथम प्रयास में हुआ चयन

सुयश सिन्हा

शाहजहांपुर। 'कामयाबी यूं ही नहीं मिलती सरे बाजार में, खुद को तपाना पड़ता है आग की बौछार में।' इस दुनिया में हर व्यक्ति का सपना होता है कि वह जीवन में सफलता हासिल करे लेकिन कुछ लोग ही कामयाबी का स्वाद चखने में सक्षम हो पाते हैं। सफल होना मुश्किल जरूर है पर नामुमकिन नहीं, बस जरूरत है तो कड़ी मेहनत, समर्पण और समय प्रबंधन के साथ अपने लक्ष्य को पहचानना, लक्ष्य के प्रति अडिग रहना और अनुषासित बन समयवद्ध तैयारी करने की जरूरत है, यही कुछ किया है अनामिका यादव ने।

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (न्यायिक) परीक्षा में अपने प्रथम प्रयास में ही सफलता हासिल करने वाली अनामिका यादव ने अपनी कामयाबी को लेकर **'लोक पहल'** से बातचीत की। बातचीत के दौरान अनामिका यादव ने बताया कि उनकी प्रारंभिक शिक्षा बिजनौर के ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल से हुई थी। कक्षा 10 में उन्होंने 10 सीजीपीए प्राप्त किया था। अनामिका ने इण्टरमीडिएट की परीखा शाहजहांपुर के श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ से उत्तीर्ण की थी। बचपन से ही न्यायिक सेवा में जाने के लिए अपना मन बना चुकी अनामिका का कानून की शिक्षा के लिए बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय और लखनऊ विश्वविद्यालय में बीएएलएलबी की प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी लेकिन उन्होंने बाद में स्वामी शुकदेवानंद विधि महाविद्यालय में प्रवेश लेकर बीएएलएलबी की परीक्षा वर्ष 2022-23 में उत्तीर्ण की थी। 12वीं परीक्षा विज्ञान विषयों के साथ उत्तीर्ण करने वाली अनामिका ने मन में ठान लिया था कि वह न्यायिक सेवा में जाकर समाज के प्रति कुछ बेहतर योगदान दे सकती हैं। अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता और परिवार को देने वाली अनामिका के

पिता जयपाल सिंह यादव पुलिस विभाग में इंस्पेक्टर है और वर्तमान में पीलीभीत में तैनात है। अनामिका की माता पूनम देवी एक ग्रहणी है जबकि उनका एक भाई का चयन आडिटर पद पर हुआ है जबकि दूसरा भाई अभी दसवीं कक्षा का छात्र है। बीएएलएलबी के प्रथम वर्ष से ही पीसीएस (जे) परीक्षा की तैयारियों में जुट गई अनामिका का मानना है कि किसी भी परीक्षा की तैयारी के लिए स्वयं पूरी लगन और मेहनत के साथ पढ़ाई करना अतिआवश्यक है, कोचिंग से कुछ सहारा तो मिल जाता है लेकिन आजकल कोचिंग विद्यार्थियों को परीक्षा का पूरा पाठ्यक्रम नहीं पढ़ाते। खासतौर से ऑनलाइन कोचिंग से उन्हें बहुत ज्यादा लाभ नहीं मिला। उन्होंने जो भी सफलता हासिल की है उसमें उन्होंने निरंतर अध्ययन को ही अपना मूलमंत्र बनाया। अनामिका का मानना है कि बिना कोचिंग के भी बड़े से बड़ी परीक्षा में सफलता हासिल की जा सकती है, केवल कोचिंग के सहारे ही सफल हुआ जा सकता है ऐसा बिल्कुल जरूरी नहीं है, क्योंकि कोई भी कोचिंग आपको परफेक्ट नहीं बना सकती, आपको सम्पूर्ण ज्ञान हासिल करने के लिए स्वयं गहन अध्ययन करना ही होगा। अनामिका ने अपनी सफलता का श्रेय ईश्वर के आशीर्वाद के अलावा अपने शिक्षकों व अपने सहपाठी मित्रों व परिवार को देती है। न्यायिक सेवा में ही जाने की उन्होंने क्यों सोचा इस बारे में अनामिका का कहना है कि न्यायिक सेवा में आने के बाद मैं समाज में महिलाओं के अधिकारों के प्रति सजग रहने की कोशिश करूंगी साथ ही समाज के अन्तिम व्यक्ति तक न्याय पहुंचाने की पूरी कोशिश करूंगी जिसके साथ कहीं न कहीं अन्याय हुआ है। उन्होंने युवाओं और अपने सहपाठी मित्रों को संदेश देते हुए कहा कि जीवन में कुछ भी हासिल किया जा सकता है बस उसे पाने की लगन और दृढ़ निश्चय होना चाहिए। सफलता कभी किसी बाहरी सहायता या कोचिंग की मोहताज नहीं, व्यक्ति अगर चाहे तो हर परिस्थिति में सफल हो सकता है। परिस्थितियों से घबराकर कभी हार नहीं माननी चाहिए। अनामिका ने बताया कि परीक्षा की तैयारी के दौरान उन्होंने खुद को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रखने के लिए योगा, ध्यान और संगीत का सहारा लिया। न्यायिक सेवा की परीक्षा में सफलता हासिल करने के बाद वह और उनका परिवार गर्व की अनुभूति कर रहा है।

शिक्षक में संवेदना होना आवश्यक: स्वामी चिन्मयानंद

शिक्षक दिवस पर सात शिक्षक 'स्वामी शुकदेवनंद शिक्षक सम्मान' से सम्मानित

लोक पहल

शाहजहाँपुर। स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय में शिक्षक दिवस पर, राष्ट्र निर्माण में शिक्षक की भूमिका विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन व पुष्पांजलि से हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मुमुक्षु शिक्षा संकुल के मुख्य अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती ने कहा कि शिक्षक के आगे सभी का सिर सम्मान से झुकता है। शिक्षा में संवेदना का होना आवश्यक है। अगर शिक्षक संवेदनशील नही है, तो वह विद्यार्थियों का कुशल मार्गदर्शन नही कर सकता। उन्होंने कहा कि पिछले दशक में गुरु बचपन मे अपने छात्रों की प्रतिभाए पहचान कर उनका निर्माण करते थे आज ऐसे ही शिक्षक और शिक्षापद्धति की आवश्यकता है।

मुख्य अतिथि और मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सर कार्यवाह और कोटा विश्विद्यालय राजस्थान के पूर्व प्रतिकुलपति डा. प्रमोद शर्मा ने कहा कि शिक्षक अपने छात्रों के लिए सर्वोच्च समर्पण करता है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि एक बार डा राधाकृष्णन को भारत रत्न पुरस्कार के लिए नामित किया गया किन्तु तब वे अपने छात्र के शोध कार्य मे व्यस्त थे अत: उन्होंने भारत रत्न लेने से इनकार कर दिया। ऐसे समर्पित गुरु ही समाज का निर्माण कर सकते है। गोष्ठी में डा. जेएस ओझा, डा. करुणा शंकर तिवारी, डा. मेघना मेंहदीरत्ता और डा. अमीर सिंह यादव ने भी सम्बोधित किया। शिक्षक दिवस के अवसर पर लिटिल आइंस्टाइन प्री स्कूल से निशि रस्तोगी, एसएसएमवी की रश्मि सक्सेना, धर्मानन्द इंटर कॉलेज की नीलम शाक्य, संस्कृत महाविद्यालय की डा रुचि मिश्रा, विधि महाविद्यालय की डा. रंजना खंडेलवाल, एसएस कॉलेज की डा. पूनम व डा. विनीता राठौर को 'स्वामी शुकदेवनंद शिक्षक सम्मान 2023' से सम्मानित किया गया।

प्रो. अनुराग अग्रवाल के संचालन में हुए कार्यक्रम मे विषय स्थापना प्राचार्य प्रो. आर के आजाद ने की। सचिव प्रो.ए के मिश्रा ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस मौके पर डा. कविता भटनागर, डा प्रियंका शर्मा व छात्राओं के द्वारा गुरुवंदना प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के धर्मेन्द्र, ईशपाल सिंह, मंजीत, अभिनव तिवारी, एसएसएमवी के सचिव अशोक अग्रवाल, मोहन मिश्रा, मृदुल शुक्ला, डा शिशिर शुक्ला, डा. आदर्श पांडेय, डा. अमरेंद्र सिंह, ममता सिंह, किरन मेहरोत्रा, संगीता मेहरोत्रा, डा. प्रभात शुक्ला, डा. विनीत श्रीवास्तव, डा आलोक सिंह समेत बड़ी संख्या में शिक्षक व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

कृष्ण की लीलाएं देखकर मंत्रमुग्ध हुए दर्शक

एसएसएमवी में कृष्ण तेरे रूप अनेक कार्यक्रम का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ सीनियर सेकेंडरी स्कूल में जन्माष्टमी का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। स्वामी शुकदेवानंद स्मृति सभागार में आयोजित 'कृष्ण तेरे रूप अनेक' नामक कार्यक्रम में विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने पूरे जोश के साथ प्रतिभाग किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के अध्यक्ष व मुमुक्षु शिक्षा संकुल के अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती ने मां शारदे की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन व माल्यार्पण कर किया। विद्यालय की छात्राओं ने स्वामी जी, सचिव अशोक अग्रवाल, एसएस लॉ कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ जेएस ओझा, डॉ अनुराग अग्रवाल, डॉ कविता भटनागर आदि सभी आगंतुकों का चंदन तिलक व पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया। इसके पश्चात बच्चों ने कृष्ण जन्म, बालकृष्ण की विभिन्न लीलाएं दर्शाते हुए महारास, महाभारत, गीता उपदेश, दही हांडी आदि विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से भगवान श्री कृष्ण के भिन्न-भिन्न रूपों का सजीव मंचन किया, जिसको देखकर सभी दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए। पूरा वातावरण कृष्णमय हो गया।

स्वामी चिन्मयानन्द ने अपने उद्बोधन में कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस तरह के कार्यक्रमों से बच्चों में धार्मिक मान्यताओं के प्रति जहां आस्था उत्पन्न होती है वहीं उन्हें अपने आराध्यों के जीवन के बारे में भी जानने का अवसर मिलता है। अंत में प्रधानाचार्या डॉ मेघना मेंहदीरत्ता ने सभी आगंतुको व अभिभावकों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के आयोजन में ममता सिंह, किरन मेहरोत्रा, शोभित अग्रवाल, अंजलि, रश्मि सक्सेना, साक्षी, मीनल, गरिमा आदि का विशेष योगदान रहा।

जनसमस्याओं को लेकर समाजवादी पार्टी ने किया धरना-प्रदर्शन

राज्यपाल को सम्बोधित ज्ञापन नगर मजिस्ट्रेट का सौंपा

लोक पहल

शाहजहांपुर। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के आवाहन पर जनपद शाहजहांपुर की जन समस्याओं को लेकर समाजवादी पार्टी की ओर से खिरनी बाग चौराहे पर सपा के जिला अध्यक्ष तनवीर खान के नेतृत्व में धरना प्रदर्षन किया और जुलूस की शक्ल में कलेक्ट्रेट पहुंचे। यहां राज्यपाल को सम्बोधित 22 सूत्रीय ज्ञापन नगर मजिस्ट्रेट डा. वेद प्रकाश मिश्रा को सौंपा। इस मौके पर सपा के जिला अध्यक्ष तनवीर खान ने कहा कि केंद्र व प्रदेश की भाजपा सरकारे जनता की समस्याओं का समाधान नहीं कर पा रही है भाजपा सरकारों ने हर वर्ग हर समाज को धोखा ही देने का काम किया है उन्होंने कहा महंगाई और बेरोजगारी चरम सीमा पर है देश और प्रदेश की जनता इनकी असलियत को जान चुकी है आने वाले लोकसभा के चुनाव में जनता भाजपा को सत्ता से बेदखल कर देश में इंडिया गठबंधन की सरकार बनाएगी। पूर्व विधायक राजेश यादव ने कहा कि उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार में अपराधों का ग्राफ लगातार बढ़ रहा है।

इस मौके पर पूर्व एमएलसी कुंवर जयेश प्रसाद, पूर्व सपा प्रदेश सचिव उपेंद्र पाल सिंह, सपा के महानगर अध्यक्ष चौधरी रामकुमार भोजवाल, निगोही नगर पंचायत के अध्यक्ष मनोज वर्मा, सपा प्रदेश सचिव विजय सिंह, अल्पसंख्यक सभा के प्रमुख महासचिव सैयद रिजवान अहमद, अल्पसंख्यक सभा के प्रदेश सचिव परवेज अंसारी, अल्पसंख्यक सभा के प्रदेश सरताज खान, गायत्री वर्मा, संजीव वर्मा, महावीर यादव, नसीम खान, डॉ नवनीत यादव, अजीज खान, प्रेमचंद कश्यप(एड),अतिउल्ला सिद्दीकी, शाहनवाज आदि मौजूद रहे।

शैक्षिक नवाचारों के प्रति सजग रहें विद्यार्थी : डा. शशि सिंह

स्वामी शुकदेवानंद कश्वलेज के शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा शैक्षिक संगोष्ठी का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। मानव जीवन में शिक्षा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक व्यक्ति कुछ वास्तविक प्रवृत्तियां लेकर इस संसार में जन्म लेता है। शिक्षा के माध्यम से इन प्रवृत्तियों से मुक्ति मिलती है,और व्यक्ति सही अर्थों में पशु से मनुष्य बन जाता है। शिक्षा से ही बालक का सर्वांगीण विकास होता है और वह अपने जीवन को सुखमय बना पाता है तथा अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए राष्ट्र के विकास में अपना सक्रिय योगदान देता है। यह विचार स्वामी शुकदेवानंद कॉलेज के शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित शैक्षिक संगोष्ठी में मुरादाबाद के गोकुलदास गर्ल्स डिग्री कॉलेज से पधारी प्रो. डॉ. शशी सिंह ने व्यक्त किये। डॉ. सिंह ने छात्र छात्राओं को शैक्षिक नवाचारों के प्रति सजग रहने को कहा। उन्होंने कहा की नई शिक्षा नीति छात्रों के लिए वरदान साबित होगी और इससे छात्र अपने भविष्य को और बेहतर तरीके से विकसित कर सकेंगे।

विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार मिश्र ने कहा कि आज का युवा कल का भविष्य है अत: छात्रों को अपने उज्जवल भविष्य के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि वर्तमान में एक कमी यह देखने को मिल रही है कि विद्यार्थियों का अपने कॉलेज और कक्षा शिक्षण से मोह भंग होता जा रहा है। शिक्षा विभाग की वरिष्ठ प्रध्यापिका डॉ. शैलजा मिश्रा मिश्रा ने कहा कि कि उन्हें अपने किताबी ज्ञान से हटकर जीवन के व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक ज्ञान की ओर भी उन्मुख होना चाहिए।

इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन एवं पुष्पार्चन से हुआ। संगोष्ठी की मुख्य अतिथि एवं आगंतुकों का स्वागत विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार मिश्रा ने किया। कार्यक्रम संयोजक डॉ. गौरव शर्मा ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस मौके पर डॉ. मीना शर्मा, डॉ. प्रभात शुक्ला डॉ.शैलजा मिश्रा, सर्वोत्तम शर्मा, शैलेंद्र द्विवेदी, शिवानी भारद्वाज, अमिता रस्तोगी, नीरज गुप्ता, प्रतिभा द्विवेदी, अभिषेक बाजपेई, मुकेश, जय, शिव आदि उपस्थित रहे।

कवि डा. इंदु अजनबी दिल्ली में हुए सम्मानित

लोक पहल

शाहजहांपुर। अखिल भारतीय साहित्यकार संघ दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में दिल्ली के द्वारका स्थित पेसिफिक मॉल में आयोजित सम्मान समारोह व कवि सम्मेलन में शहर के कवि डा. इन्दु अजनबी को उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त कवयित्री डॉ मधु चतुर्वेदी ने शॉल ओढ़ाकर व सम्मान पत्र तथा ट्रॉफी देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष कमलकांत तिवारी ने कहा कि डॉ अजनबी को सम्मानित करके संस्था स्वयं सम्मानित हुई है।

कार्यक्रम में मुम्बई के हरीश शर्मा यमदूत, बलराम सरस व राकेश शम्स, एटा, प्रत्योश मिश्रा काशीपुर, ध्रुव चंद्र त्रिपाठी उन्नाव, कृष्णकुमार सोलंकी व मीनाक्षी भसीन दिल्ली समेत अनेक रचनाकार उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन संयोजक ऋषिकुमार शर्मा 'च्यवन' ने किया।

आवश्यकता है
लोक पहल
साप्ताहिक समाचार पत्र को
जनपद शाहजहाँपुर के समस्त क्षेत्रों, तहसीलों, ब्लाक एवं ग्राम स्तर पर संवाददाता चाहिए।
पूर्ण बायोडाटा सहित आवेदन करें।
सम्पर्क करें : 9935740205, 9455152599
Write to us : lokpahalspn@gmail.com

रसायन विज्ञान के बेसिक नियमों को आत्मसात करें विद्यार्थी: प्रो. टंडन

एस एस कालेज में सेमीनार का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। रसायन विज्ञान के विधार्थी यदि विषय के बेसिक नियमों को आत्मसात करें तो उन्हे गूढ़ रासायनिक अभिक्रियाओं को रटने की आवश्यकता नहीं पड़ती। अधिकतर विधार्थी इन अभिक्रियाओं को जटिल समझते हुए इनसे बचने की कोशिश करते हैं जिसके कारण प्रतियोगी परीक्षाओं में वे अपेक्षाकृत सफल नही हो पाते। उक्त उदगार एसएस कॉलेज के रसायन विज्ञान विभाग की ओर से आयोजित 'स्टेडी स्टेट सिद्धांत और उसके अनुप्रयोग' विषयक एक दिवसीय सेमीनार में बोलते हुए इलाहाबाद विश्वविद्यालय के भूतपूर्व रसायन विभागाध्यक्ष प्रोफेसर पीके टंडन ने व्यक्त किया। प्रो. टंडन ने बताया कि किसी भी रासायनिक क्रियाविधि को उसके वास्तविक स्वरूप में लाने से पूर्व उसे अनेकों नियमों के साथ साथ गणितीय तथा

भौतिकी परिकलनों की कसौटी पर खरा उतरना पड़ता है। विभिन्न स्लाइडों के माध्यम से उन्होंने समझाया कि किस प्रकार से स्टेडी स्टेट सिद्धांत के आधार पर अनेकों रसायनिक क्रियाविधियों को सिद्ध किया जा सकता है। सेमिनार का आरम्भ कालेज प्राचार्य प्रो. आरके आजाद ने मुख्य अतिथि को बुके और अंगवस्त्र प्रदान कर किया।

प्रो. आजाद ने कहा कि आज भले ही सारी पाठ्य सामग्री इन्टरनेट के माध्यम से सभी लोगो को सुलभ है परंतु सेमिनार के माध्यम से विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत विषय विधार्थियों के मन मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डालती है। कार्यक्रम संयोजक डॉ आलोक कुमार सिंह ने कहा कि शोध और उच्च शिक्षा में कैरियर की संभावना तलाशने वाले छात्रों को विषय पर गहरी पकड़ के साथ साथ कुशल वक्ता भी होना चाहिए। डॉ अमित कुमार के संचालन में हुए कार्यक्रम मे दस विधायर्थियों ने शोध पत्र वाचन किया जिनमे से प्रियांशी मिश्रा और शिवांगी सिंह के शोध पत्रों को विशेष सराहना मिली। इस अवसर पर डॉ चन्दन गिरि,डॉ संदीप दीक्षित, डॉ मंजीत सिंह, डॉ शशांक गुप्ता, सत्यपाल और धर्मेंद्र उपस्थित रहे।

जनसुनवाई रैंकिंग में शाहजहांपुर को प्रदेश में मिला तीसरा स्थान

लोक पहल

शाहजहांपुर। जनसुनवाई रैंकिंग में जिले को प्रदेश भर में तीसरा स्थान मिला है। शासन ने आईजीआरएस जनसुनवाई की शिकायत, निस्तारण व डिफाल्टर के आधार पर जिलों की रैंकिंग जारी की है। इस रैंकिंग में जिला शाहजहांपुर को पूरे प्रदेश में तृतीय स्थान मिला है।

अमेठी को प्रथम और कन्नौज को द्वितीय स्थान मिला है। शाहजहांपुर को 130 में से 128 अंक मिले हैं जोकि पूर्णांक का 98.46 प्रतिशत है। अगस्त महीने में जिलाधिकारी की ओर से डिफॉल्टरों के विरुद्ध कड़े आदेश जारी किए गए थे। जनपद की इस उपलब्धि में जिलाधिकारी के विशेष प्रयासों का भी योगदान है।

डीएम व एसपी ऑफिस में 996 संदर्भ के फीडिंग का लक्ष्य रखा गया था, अगस्त माह में फीड किए गए कुल संदर्भों की संख्या 1125 है जोकि लक्ष्य का 112.95 प्रतिशत है। संदर्भों के भौतिक सत्यापन का लक्ष्य 40 रखा गया था, कुल सत्यापित संदर्भों की संख्या 46 रही जो की कुल लक्ष्य का 115 प्रतिशत है। संदर्भों के मार्किंग में औसतन एक दिन का समय लगा। डिफॉल्टर संदर्भों का कुल प्रतिशत 0.58 प्रतिशत रहा।

नेहरू युवा केन्द्र ने कलश यात्रा निकाल घरों से ली मिट्टी

शाहजहांपुर (लोक पहल)। नेहरू युवा केन्द्र के तत्वावधान में 'मेरी माटी मेरा देश', माटी को नमन, वीरों का वंदन कार्यक्रम के तहत ग्राम अकर्रा रसूलपुर में जिला युवा अधिकारी मयंक भदौरिया के नेतृत्व में हर्षोल्लास के साथ अमृत कलश यात्रा निकाली गई। जिसके अंतर्गत घरों से मिट्टी एवं चावल एकत्रित किये गए और पंच प्रण की शपथ भी ली गई। कलश यात्रा पूरे उत्साह से देशभक्ति गीत एवं भारत माता की जय, वंदे मातरम और गाजे बाजे, ढपली और मिट्टी एंथम बजाते हुए निकली गई। 3 सितम्बर तक चलने वाले इस अभियान के तहत घरों से मिट्टी या चावल एकत्रित कर अमृत कलश में संग्रहित कर पंच प्रण शपथ, अमृत वाटिका निर्माण, विद्यालयों में शिलाफ्लक्म निर्माण हेतु भी प्रयास किया जायेगा। जिला युवा अधिकारी ने सभी लोगों से इस अभियान से जुड़कर अपने अंदर राष्ट्रप्रेम और कृतिज्ञता का भाव लाने का अनुरोध किया।

कलश यात्रा में नेहरू युवा मंडल समिति से लज्जाराम वर्मा, महेश कुमार वर्मा, गायत्री शक्तिपीठ से निर्मल उपाचार्य, रामबहोरे वर्मा, अजय वर्मा, आशुतोष वर्मा, रजत वर्मा, शिवकुमार, हिमांशु, रवि सक्सेना, सुशील कुमार समेत विभिन्न युवा मंडल सदस्यों, राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवको एवं अन्य स्थानियजन की सक्रिय भागीदारी रही।

सिटी पब्लिक स्कूल में मनाया गया शिक्षक दिवस

लोक पहल

शाहजहांपुर। शिक्षक दिवस पर सिटी पब्लिक स्कूल में 'शिक्षक शिष्य सम्मान' समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि नगर पंचायत उसावा बदायूं की चेयरमैन प्रियंका अनिल सिंह चौहान ने शिक्षकों और बच्चों को सम्मानित किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि बच्चे देश का भविष्य होते हैं एवं भारत के नव निर्माण में देश की बुनियाद होंगे। उन्होंने बच्चों से देश के महापुरुषों से प्रेरणा लेकर अपने पठन-पाठन को और उत्तम बनाने के लिए कड़ी मेहनत करने की अपील की। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती व डॉ. राधाकृष्णन के चित्र पर माल्यार्पण से हुआ।

इस मौके पर डॉ संजीव सिंह, राजकुमार सिंह, अंजली श्रीवास्तव, कोशिकीय वर्मा, मीरा अवस्थी, प्रेम सिंह, रमेश यादव आदि लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में डॉक्टर संजीव सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अनिल सिंह चौहान ने की व संचालन मुनीश सिंह परिहार ने किया।

उद्यम स्थापित कर सरकार के संसाधनों को मजबूत बनाएं युवा: स्वामी चिन्मयानन्द

एसएस कालेज में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

लोक पहल

शाहजहाँपुर। स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय में वाणिज्य संकाय व स्वामी शुकदेवानंद विधि महाविद्यालय के संयोजन मे 'उद्यमिता, स्वरोजगार एवं स्वावलंबी भारत' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ स्वामी शुकदेवानंद के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर व पुष्पांजलि अर्पित कर हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मुख्य शिक्षा संकुल की अधिष्ठाता स्वामी चिन्मानंद सरस्वती ने कहा कि आज का युवा सोचता है कि मेरी जिम्मेदारी मेरे परिवार की है। उसकी यह सोच युवाओं को जिम्मेदारी लेने से पीछे करती है, आज के युवा को चाहिए कि वह सरकारी संसाधन पर निर्भर न रहकर उद्यम स्थापित कर सरकार के संसाधनों को मजबूत बनाएं।

मुख्य अतिथि जिला उद्योग केंद्र के सहायक प्रबंधक अरुण कुमार पांडे ने कहा की 18 से 40 साल की आयु के युवा यदि उद्योग स्थापित करने के लिए सरकारी योजना का आर्थिक लाभ लेते हैं, तो उन्हें 25 प्रतिशत सब्सिडी प्रदान की जाती है।

विशिष्ट अतिथि इंडियन बैंक के प्रबंधक अभिनव निगम ने कहा कि उद्यम स्थापित करने के लिए पूँजी अर्जन को जटिल प्रक्रिया के रूप में न देखे। अब बैंकों ने लोन देने की प्रक्रिया का सरलीकरण किया गया है।

इस अवसर पर युवा उद्यमी सम्मान से गीता श्रीवास्तव, कु. आकांक्षा सिंह, कु. कशिश वर्मा, श्री देवांश दीक्षित आदि को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। वाणिज्य विभागाध्यक्ष प्रो अनुराग अग्रवाल के संचालन में हुए कार्यक्रम में सचिव प्रो. ए के मिश्रा ने उदघाटन भाषण से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। स्वागत भाषण प्राचार्य प्रो. आर के आजाद पढ़ा। सभी के प्रति धन्यवाद विधि महाविद्यालय के प्राचार्य डा.जे एस ओझा ने दिया। डा. कविता भटनागर व छात्राओं ने सरस्वती वंदना से कार्यक्रम का आरंभ व राष्ट्रगान से समापन हुआ।

इस अवसर डा. प्रियंका शर्मा, मृदुल शुक्ला, अमिता रस्तोगी, रचना रस्तोगी, शिवानी भारद्वाज, अभिषेक बाजपेई, संदीप, अनिल कुमार, अशोक कुमार,विजय सिंह, दीप्ती गंगवार शिक्षक के समेत प्रिंसी सिंह, पिंकी सिंह, शगुन ईशा आदि छात्राओ समेत बडी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

धरोहर

शाहजहांपुर के पुलों की दास्तान

सुशील दीक्षित 'विचित्र'

शाहजहांपुर में पक्का पुल लोधी पुल और गर्रा का पुल आदि तीन पुराने पुल हैं। गर्रा पर नया पुल बन गया है पुराने पुल पर मार्केट बना दी गयी है। यह पुल 1914 में बनाया गया था। इससे पहले नदी पार करने के लिए नाव के पुल या नाव का इस्तेमाल होता। यह पुल शहर को नदी पार कर एक विस्तृत दुनिया से जोड़ देता है। दिल्ली, कानपुर या इस दिशा में कहीं भी जाने को रही स्वतंत्र हो जाता है। 1857 की प्रथम क्रान्ति में जलालाबाद को जेर कर अंग्रेजों ने मंजिल दर मंजिल मारते हुए जब अजीजगंज को और से शहर में प्रवेश करना चाहा तो गर्रा ने गुर्रा कर उनका रास्ता रोक दिया था। मुझे इस बात पर बार बार ताज्जुब होता है कि क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों को नाव का पुल बनाने ही क्यों दिया। उन्होंने उसी पर अंग्रेजों को रोकने को व्यवस्था क्यों नहीं की ? इस नदी पर 1914 तक कोई पल बनाने की जरूरत नहीं समझी गयी जबकि उत्तर में रेलवे लाइन पड़ चुकी थी और ट्रेनों के पहिये अबाध गति से चलते रहे गर्रा पर रेलवे पुल भी अंग्रेज बना चुके थे। मेरे ख्याल से 1914 में जब प्रथम विश्व युद्ध छिड़ा होगा तो अंग्रेजों के सामने द्रुत गति से सेना इधर से उधर करने की भारी जरूरत आ खड़ी हो गयी होगी। ट्रेन सिस्टम इसके लिए पर्याप्त नहीं साबित हो रहा होगा। इसलिए अंग्रेजों ने गर्रा पर पुल बांधा। इसीलिये 1914 में बंधा क्यूंकि तब उन्हें इसकी जरूरत थी। पुल बहुत मजबूत है। भारी भारी बाढ़ में पानी के कितने भी बजनी प्रहार को वह झेल कर 19 वर्षों से जस का तस खड़ा है। इस पर जब कोई भारी वाहन निकलता है तो पूरा पुल थर्रा जाता है। वजह यह है कि पुल भारी भारी स्प्रिंग पर रखा हुआ है। दबाब पड़ने पर पुल की छत नीचे दबती और उठती है। जिसे पक्का पुल कहते हैं वह चाहें जितना पक्का हो लेकिन मजबूती में गर्रा पुल के सामने कहीं नहीं ठहरता। यह पुल एक बार बाढ़ में भी बह चुका है जबकि यह गर्रा पुल से कमसेकम 25 साल छोटा था। मैं इसके लिखे पढ़े इतिहास को शुरू से शुरू करता हूँ। दरअसल कहानी है कि मुगलों की लौटती फौजों के सेनापति ने खन्नौत के किनारे अपनी नाव में मौज से लेटे मल्लाह को आवाज दे कर नदी पार कराने को कहा, उसने मना कर दिया। इस पर उसे शाहजहां बादशाह की धमकी दी गयी। उसने और भी ऐंठ कर कहा कि वह अपने भोला राजा के अलावा न किसी राजा को जानता है और न मानता है। नतीजन सेना को उसी किनारे पर पड़ाव डालना पड़ा। रात को भोला के सिपाहियों ने बेगमों को लूट लिया। बाद में बहादुर खां और दिलेर खां ने शाहजहांपुर पर हमला करके फतह कर लिया। इसके बाद नदी पर लकड़ी के पटलों से पुल बनाया जाता था जो कच्चा पुल कहलाता था। अवध के वजीर हकीम मेंहदी हसन ने इस पर पक्का पुल बनवाया। पुल के पूरबी हिस्से के उत्तरी कोने पर खड़े हो कर झांकें तो आप को पुरानी लाल ईंटों की दो समानांतर दीवारे दिखाई देंगी। इसी पर कभी मुगलों के जमाने का पहला पुल डाला गया था। यह बात 1825- 26 की है। चूने के साथ तमाम दालों और अन्य पदार्थों को मिला कर बनाया गया यह पुल न केवल मजबूती में अद्वितीय था बल्कि दर्शनीय भी था। सौ साल बाद तत्कालीन गवर्नर के संदेह पर जब यह पुल तोडा गया तो मजदूरों के दाँतों पसीना आ गया। तब बारूद लगा कर पुल उड़ाया गया। इससे थोड़ा दक्षिण की ओर हटा कर दूसरा पुल बनाया गया। 1957 की बाढ़ में यह पुल वह गया। तब वर्तमान पुल का निर्माण हुआ। लोधीपुल भी अंग्रेजों ने सड़क मार्ग से सीतापुर और लखनऊ को जोड़ने के लिए करवाया था क्यूंकि इसी नदी के किनारे छावनी थी। ग्राम वसुलिया के पास खन्नौत पर भी अंग्रेजों ने सेना के लिए पुल बनवाया। इस पर पहले आम आदमी प्रतिबंधित था लेकिन अब नया पल बन गए है

साहित्य सभा ने किया डा. विष्णु सक्सेना का अभिनंदन

शाहजहांपुर (लोक पहल)। उत्तर प्रदेश साहित्य सभा के प्रान्तीय अध्यक्ष अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध गीतकार डॉ विष्णु सक्सेना के शाहजहांपुर आगमन पर सभा की स्थानीय इकाई की ओर से जिला संयोजक डॉ इन्दु अजनबी, अध्यक्ष सरिता बाजपेई व महासचिव पीयूष शर्मा ने होटल ग्रांड आर्क पहुंच कर उनका अंगवस्त्र प्रदान कर व माल्यार्पण कर स्वागत व अभिनंदन किया।

एसएस कालेज में एमएससी भौतिकी में कनक रहीं अव्वल

शाहजहांपुर (लोक पहल)। एमजेपी रूहेलखंड विश्वविद्यालय के द्वारा एमएससी द्वितीय वर्ष का परीक्षा परिणाम घोषित कर दिया गया। स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय के भौतिक विज्ञान विभागाध्यक्ष शिशिर शुक्ला ने बताया कि एमएससी फाइनल ईयर का परीक्षा परिणाम 95 प्रतिशत रहा है। परीक्षा में कनक सिंह 81.25 प्रतिशत अंक हासिल करके प्रथम स्थान पर रहीं। अंजली अवस्थी एवं कंचनलता पाल 79.83 प्रतिशत अंकों के साथ द्वितीय स्थान पर रहीं जबकि 77.25 प्रतिशत अंक प्राप्त करके अदिति सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विभाग के शिक्षक सत्येंद्र कुमार सिंह ने बताया कि इस बार सभी विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए हैं। विद्यार्थियों की इस सफलता पर मुमुक्षु शिक्षा संकुल के मुख्य अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती, महाविद्यालय के सचिव डॉ अवनीश मिश्र, प्राचार्य प्रो. आर के आजाद एवं उपप्राचार्य प्रो. अनुराग अग्रवाल ने आशीर्वाद देते हुए विद्यार्थियों एवं विभाग की इस सफलता पर हर्ष व्यक्त किया। साथ ही विज्ञान संकाय के सहसंकायाध्यक्ष डॉ आलोक सिंह, राजनंदन सिंह राजपूत, हर्ष पाराशरी, नितिन शुक्ला, प्रशांत शर्मा सहित विभाग के सभी सदस्यों ने विद्यार्थियों शुभकामनाएं दीं।

/ सम्पादकीय /

बदहाल शिक्षा व्यवस्था, तस्वीर बदलने का दावा

दिल्ली की हो या किसी अन्य राज्य की सरकारें आए दिन वहां के सरकारी स्कूलों की शिक्षा व्यवस्था को बेहतरीन और आदर्श उदाहरण बताती रहती है। इस बात का हवाला दिया जाता है कि हाल के वर्षों में देश के सरकारी स्कूलों की तस्वीर बदल गई है और देश-विदेश में इसे दर्ज किया जा रहा है। अगर ऐसा सचमुच हो तो यह किसी के लिए भी खुश होने वाली बात हो सकती है लेकिन क्या वास्तव में ऐसा है देश के सरकारी स्कूलों की चरमराई शिक्षण व्यवस्था के अनेकानेक उदाहरण रोज सामने आते रहते है। स्कूल के बच्चों को तो जाने दीजिए वहां के शिक्षक भी षिक्षण कार्य के लिए उपर्युक्त नहीं पाए जाते। देश भर में सरकारी स्कूलों की बदहाली की जैसी स्थितियां बनी हुई हैं, उसमें यह उत्साह जगाने वाली बात है। लेकिन दिल्ली और कुछ अन्य राज्यों में शिक्षा को लेकर जो प्रचार प्रसार पर खर्च किया जाता है उसके अनुपात में वास्तविक प्रगति और शैक्षिक गुणवत्ता का सवाल कसौटी पर हो तो यह सवाल स्वाभाविक है कि आखिर सरकार स्कूली शिक्षा की तस्वीर को बदल डालने के मामले में किस तरह की उपलब्धियों का दावा करती है! स्कूल परिसर में अब कई बार छात्रों के बीच आपराधिक हरकतों और कुछ शिक्षकों की गैरजिम्मेदारी के जैसे मामले सामने आ रहे हैं, उससे लगता है कि देष की शिक्षा व्यवस्था के बारे में सरकारी प्रचार और दावे अभी हकीकत से दूर हैं। अभी कुछ दिन पहले उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले में एक शिक्षिका द्वारा अल्पसंख्यक समुदाय के छात्र को अन्य समुदाय के छात्रों से पिटवाने का मामला सामने आया था वहीं दिल्ली के दो सरकारी स्कूलों के बारे में आई खबर यह सोचने पर मजबूर करती है कि ये परिसर व्यवस्थागत स्तर पर विद्यार्थियों के लिए कितने सुरक्षित हैं और शिक्षक अपने दायित्वों को लेकर कितने सजग हैं!

गौरतलब है कि दिल्ली के एक स्कूल के दो छात्रों ने पुलिस को दी गई अलग-अलग शिकायत में कहा कि उनके पांच-छह सहपाठियों ने स्कूल के ग्रीष्मकालीन शिविर में उनका यौन उत्पीड़न किया था। अफसोसनाक यह भी है कि पीड़ित छात्रों ने इसकी जानकारी शिक्षकों और उपप्रधानाचार्य को दी। लेकिन किसी शिक्षक ने इसकी सूचना पुलिस या अन्य उच्च अधिकारी को नहीं दी। अब उन्हें निलंबित किया गया है, लेकिन क्या इतने भर से इस समस्या की व्यापकता और गंभीरता का हल निकाल लिया जाएगा? असली चुनौती शैक्षिक माहौल को बेहतर करने और उसकी गुणवत्ता में सुधार करने के साथ-साथ शिक्षकों और विद्यार्थियों के सोचने-समझने के तौर-तरीके में बदलाव लाने की है। लेकिन संसाधनों के स्तर पर कुछ स्कूलों को चमकाने से वैचारिक और व्यवहारगत जड़ता को दूर नहीं किया जा सकता। इसका एक उदाहरण यह भी सामने आया कि दिल्ली के ही एक स्कूल में एक शिक्षिका पर यह आरोप लगा कि उसने अल्पसंख्यक समुदाय के चार छात्रों पर धार्मिक लिहाज से अपमानजनक और सांप्रदायिक टिप्पणी की। बात चाहें उत्तर प्रदेष की हो या दिल्ली की लेकिन अगर स्कूलों में संकीर्ण मानसिकता से ग्रसित षिक्षक मौजूद हैं तो स्कूलों में इस तरह के अपराध होना लाजमी है। हालांकि इस मामले में भी प्राथमिकी दर्ज की गई। सवाल है कि विदेश भेज कर शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण दिलाने के दावे के समांतर कुछ शिक्षकों के भीतर गहरे पैठी ऐसी संकीर्णता और कुंठाओं को दूर करने के लिए सरकार क्या योजना चलाती है! स्कूलों में बच्चों के किसी अपराध का शिकार होने की स्थिति में या उनकी सामाजिक पहचान को निशाना बनाने के मामले में अगर कुछ शिक्षकों का भी ऐसा रवैया सामने आता है तो यहां की शिक्षा व्यवस्था में क्रांतिकारी सुधार करने और इसके आदर्श होने का ढिंढोरा पीटने का क्या अर्थ रह जाता है? शिक्षक दिवस पर शिक्षकों का सम्मान किया जाना जरूरी है लेकिन उनका सम्मान करने से पहले हमें यह जरूरी सोचना चाहिए कि क्या यह शिक्षक सम्मान के लिए उपर्युक्त है अथवा नहीं।

संस्कृत भाषा और विश्व शांति का पथ

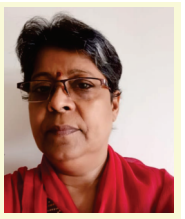

डा. कनक रानी

सर्वजनहित के निमित्त कामना की गई कि-न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं ना पुनर्भवम्। कामये दःुखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशम्।। मैं संप्रभुता की अभिलाषा नहीं करता, मुझे स्वर्ग वा मोक्ष भी नहीं चाहिए। मैं दुःखसंतप्त प्राणियों की पीड़ा हरने-सुख शांति देने में सहायक बनूं, यही मेरी कामना है। संस्कृत एक ऐसी भाषा है जिसमें प्राणिमात्र के सुख-शांति की कामना की गई। यहां व्यष्टि नहीं, समष्टि हित की कामना है। यहां स्वार्थ नहीं, परार्थ जीवन जीने की शिक्षा है। यहां भौतिक लालसा नहीं, जनहितार्थ गतिशीलता है। यहां स्वकेंद्रित विचारधारा नहीं अपितु लोकमंगल का उच्चादर्श है। यहां संवेदना, सहानुभूति, परदुःख कातरता के स्वर मुखरित हैं।

सार्वभौमिक अशांति आज चिंता का विषय है। आत्मकेंद्रित नीतियों के चलते प्राकृतिक संसाधनों में प्रतिकूलता भी तन-मन को अषांति दे रही है। आज भौतिक प्रगति तो है किंतु सर्वत्र अशांति है। मानवता की संरक्षा पर प्रश्न है। चहुंओर तनाव, अवसाद, असंतोष, असुरक्षा की झलक है। आध्यात्मिक और लोकोपकारी मूल्यों का क्षरण हो रहा है। परिणामतः मानव समाज बहुविध समस्याओं से आक्रांत हो रहा है। ध्यातव्य है कि आध्यात्मिक-नैतिक मूल्यों का समावेष भौतिक प्रगति को सुख-शांति से युक्त कर सकता है।

संस्कृत मात्र भाषा ही नहीं, समस्त भाषाओं की जननी भी है। संस्कृत भाषा सनातन संस्कृति की पोषिका है। मानवता की संरक्षिका है। नैतिक मूल्यों की प्रतिपादिका है। ज्ञान विज्ञान का भंडार है यहां। शास्त्रीय, साहित्यिक, वैज्ञानिक, दार्षनिक, व्याकरणिक, आयुर्वेदिक विशिष्टता, इस भाषा को समृद्ध एवं विशिष्ट बनाती हैं। यह पुरुषार्थ की महत्ता का प्रतिपादन कर मानव के समग्र विकास का पथ प्रशस्त करती है। संस्कृत भाषा दया- प्रेम-करुणा-मैत्री- कर्तव्यनिष्ठा- उद्योग- विनम्रता आदि मूल्यों के माध्यम से विश्व शांति की दिशा में प्रभावी समाधान देती है। निस्सन्देह, सद्विचारों और तदनुरूप कर्मों को मूर्त कर सार्वत्रिक सुख-शांति की आशा की जा सकती है।

संस्कृत ऐसी भाषा है जो मानवमात्र के लिए अनुशासित और विवेक पूर्ण जीवन पद्धति का निरूपण करती है। इस भाषा में रचित साहित्य सार्वभौमिक जीवन के सूत्रों को सुस्पष्ट करता है। यहां जातीयता- प्रांतीयता- सांप्रदायिकता का किंचित् स्थान नहीं। यह मानव कल्याण के प्रभावी कारकों को संजोए हुए है। लोकमंगलार्थ स्वार्थपरता

संस्कृतम्

से पृथक्करण और मानव हितों के संरक्षण पर बल देते हुए संदेश दिया गया कि मनुष्यता को धारण करो- मनु र्भव। शांति तो सनातन संस्कृति का- भारतीय दर्शन का मूल तत्व है। समाज-कल्याण-राष्ट्रोन्नति के लिए इसकी अत्यधिक आवष्यकता है। संघर्ष, आतंक और अशांति के इस दौर में संस्कृत भाषा और उसके साहित्य में विश्व शांति की अपार संभावनाएं देखी जा सकती हैं। हर सहृदय को शांति की अभिलाषा है। शांति हेतु जीवन मूल्यों से अनुप्राणित करने का सामर्थ्य संस्कृत साहित्य में है। यहां विश्व बंधुत्व, सह अस्तित्व, समरसता, आत्मवत परिदर्शन आदि उत्तम जीवन के सूत्र व्याख्यायित हैं। अहिंसा मानवता के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतएव 'अहिंसा परमो धर्मः' कहकर हिंसा की वर्जना की गई। विष्व शांति के लक्ष्यगत सर्वजन हित की कामना की गयी- सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग् भवेत्।।

संस्कृत साहित्य में अपना- पराया जैसे संकीर्ण विचार सर्वथा हेय हैं- वसुधैव कुटुंबकम। उदारवादी व्यक्ति के लिए क्या अपना, क्या पराया? यहां समग्र पृथ्वी के लिए कौटुंबिक भावना है। दृष्टिकोण में कितनी व्यापकता? भावों की कितनी उत्कृष्टता? ईर्ष्या, द्वेष, असहिष्णुता, असहयोग, अविश्वास, असंतोष आदि दुर्भाव तो अशांति को बढ़ाते हैं। द्वेष असहिष्णुता की प्रसरण भूमि है। अतः द्वेष मत करो- मा विद्विषाव है। आत्मिक और सामाजिक शांति की दृष्टि से द्वेष नकारात्मक तत्व है। द्वेष होता है तो अशांति होती है। शांति की प्रतिष्ठापना के लिए द्वेष-विद्वेष को तिलांजलि देना आवश्यक है। प्रेम और सौहार्द को अपनाकर द्वेष को निर्मूल किया जा सकता है।

संस्कृत साहित्य में शांति और आत्मीयता की आवश्यकता को लक्षित करते हुए उपदेश दिया गया कि- आत्मनः प्रतिकूलानि परेषाम् न समाचरेत। स्वार्थ और प्रतिद्वंद्विता शांति के लिए हानिकर हैं। इनके वषीभूत होने पर विरोधी विचार पनपते हैं। परपीड़ा को निन्दनीय बताते हुए परहित में संलग्नता का आग्रह किया गया- परहिताय परोपकारः पापाय परपीड़नम। यह आंतरिक विकास के साथ- साथ विश्व शांति में भी सहायक है। क्रोध अशांति तथा अविवेक को जन्म देता है- क्रोधात् भवति सम्मोहः- श्रीमद्भगवद्गीता। अतः जनहित में इस पर नियंत्रण आवश्यक है।

नीतिकारों के मतानुसार सत्याचरण तथा धर्माचरण से समाज में सकारात्मकता विस्तारित की जा सकती है। अतएव सत्यं वद, धर्मं चर, संगच्छध्वं, संवदध्वं सदृष संदेशों पर बल दिया गया। शांति की स्थापना में राष्ट्रीय एकता महत्वपूर्ण भूमिका रच सकती है।

अस्तु, संपूर्ण ब्रह्मांड में शांति की प्रार्थना वैदिक साहित्य को उल्लेखनीय बनाती है- ओं द्यौ शांतिः अंतरिक्षं शांतिः पृथ्वी शांतिरापः शांतिरोषधयः शांति र्वनस्पतयः शांति र्विश्वेदेवाः शांतिर्ब्रह्म शांतिः सर्वं शांतिः शांतिरेव शांतिः सामा शांतिरेधि ओं शांतिः शांतिः शांतिः। निष्कर्षतः संस्कृत भाषा और उसमें निहित सामाजिक मूल्यों की सुदृढ़ नींव पर विष्व शांति को मूर्त किया जा सकता है।

योगी के नेतृत्व में बदलता उत्तर प्रदेश

डा. रामशंकर पाडेंय

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था बनाने का जो स्वप्न था वह हकीकत में बदलने लगा है, इसके लिए उन्होंने अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन रणनीति बनाकर प्रशासन को बेहतर करने, व्यापारियों की सुगमता को बढ़ाने, कृषि क्षेत्र को मजबूत करने के लिए अनेक उच्च स्तरीय समितियां गठित की, जो समय-समय पर प्रदेश की उन्नति के लिए सुझाव दे रही है। निजी निवेश को आकर्षित करने के लिए सरकार ने सकारात्मक कदम उठाकर आईटी, आईटीएस ,डाटा सेंटर, ईएसडीएम, डिफेंस तथा एयरोस्पेस, टेक्सटाइल इलेक्ट्रॉनिक वाहन एवं पर्यटन आदि क्षेत्र में निवेशकों को तैयार किया है जिससे रोजगार के अवसर तो बढ़ेंगे ही साथ में उत्तर प्रदेश की वार्षिक आय में भी बढ़ोतरी होगी। वार्षिक आय की बात करें तो उत्तर प्रदेश की दसवीं पंचवर्षीय योजना में आर्थिक विकास की दर 5.2 प्रतिशत थी जो 11वीं पंचवर्षीय योजना में बढ़कर सात प्रतिशत वार्षिक हो गई। कॉविड-19 महामारी के दौरान गत दो-तीन वर्ष पूरे देश में मंदी रही परंतु योगी सरकार की आर्थिक नीतियों एवं नियोजित प्रयासों के कारण प्रदेश में आर्थिक गतिविधियां लगातार बढ़ती रही । वित्तीय वर्ष 2020-21 में सकल राज्य घरेलू उत्पाद 16,45,317 करोड़ थी जो 2021-22 में लगभग 20प्रतिशत बढ़ोतरी के साथ 19,74,532 करोड रुपए हो गई प्रति व्यक्ति आय वर्ष 2011- 12 में रुपए 3200 2 से बढ़कर वर्ष 2020-21 एवं 2021-22 में क्रमशः 61374 रुपए एवं 70792 रुपए हो गई । 2022- 2023 में राज्य को 21.31 लाख करोड रुपए आय होने का अनुमान है आरबीआई के अगस्त 2023 के बुलेटिन के अनुसार वित्तीय संस्थानों से फंड एकत्र करने के लिए 16.2 प्रतिशत निवेश में हिस्सेदारी के साथ उत्तर प्रदेश का पूरे देश में प्रथम स्थान है। औद्योगिक माहौल के कारण ही निवेश के लिए इंटरनेशनल कंपनियां अपनी रुचि दिखा रहे हैं।

उत्तर प्रदेश में पर्यावरणीय पर्यटन ,प्राकृतिक पर्यटन ऐतिहासिक एवं विरासत पर्यटन ,सांस्कृतिक पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, ग्रामीण एवं शैक्षिक पर्यटन, की अपार संभावनाएं हैं पर्यटन उत्तर प्रदेश में गरीबों को दूर करने रोजगार को उत्पन्न करने तथा ग्रामीण विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। पर्यटन वृद्धि के कारण राजस्व में वृद्धि के साथ-साथ अप्रत्यक्ष रोजगार का भी सृजन हो रहा है उत्तर प्रदेश में वर्ष 2022 में 24 करोड़ 87 लाख से अधिक

पर्यटक अनेक स्थानों पर आए जिनमें भारतीय पर्यटकों की संख्या 24 करोड़ 83 लाख एवं विदेशी पर्यटकों की संख्या 4 लाख दस हजार से अधिक रही। जिस प्रकार सरकार ने एक जिला एक उत्पाद योजना पर कार्य किया है उसी प्रकार अब एक जिला एक पर्यटन केंद्र का भी विकास किया जा रहा है उत्तर प्रदेश में पर्यटन की नीतियों एवं विकास योजनाओं जैसे स्वदेश दर्शन, प्रसाद योजना, हृदय योजना, सुगम्य भारत, स्वच्छ भारत, के द्वारा पर्यटन के प्रति जागरूकता फैलाकर पर्यटक क्षेत्र का लगातार विकास किया जा रहा है।

कभी बीमारू राज्य कहा जाने वाले प्रदेश में आज गरीबी उन्मूलन और विभिन्न योजनाओं के माध्यम से किए जाने वाले प्रयास के कारण राजस्व सरप्लस हो गया। वर्ष 2016-17 में राज्य का कर राजस्व 86 हजार रुपए का था जो वर्ष 2023 - 24 में 2,49,625 करोड रुपए होने का अनुमान है जो कि वर्ष 2022-23 के संशोधित अनुमान से 42प्रतिशत अधिक है वर्ष 2016-17 में सेल टैक्स-वैट लगभग 51 883 करोड रुपए का था जो 2022-23 में बढ़कर 125 करोड रुपए के पार हो गया। योगी सरकार की वित्तीय प्रबंधन एवं दूरदर्शिता के कारण यूपी में पूर्व में बजट का लगभग 8प्रतिशत ऋणओ के ब्याज पर खर्च होता था वर्ष 2022-23 में 6.5प्रतिशत पर आ गया। आंकड़ों से स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था मजबूत और आत्मनिर्भर हो रही है। नीति आयोग की रिपोर्ट राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक प्रगति समीक्षा 2023 के अनुसार सरकार की कोशिसो के कारण 3.43 करोड़ लोग बहुआयामी गरीबी से उबरने में कामयाब हुए हैं इसके कारण अंतोदय का संकल्प पूरा होने की उम्मीद है। रिपोर्ट के अनुसार बहुआयामी गरीबों के अनुपात में सबसे अधिक कमी उत्तर प्रदेश में दर्ज की गई बिहार, मध्य प्रदेश, उड़ीसा ,और राजस्थान जैसे राज्यों का नंबर अब उत्तर प्रदेश के बाद आता है।

आज योगी के नेतृत्व में प्रदेश में चौतरफा विकास हो रहा है सरकार आर्थिक वृद्धि के नए प्रतिमान स्थापित कर रही है यूपी में निवेश का बेहतर माहौल, सबका साथ सबका विकास, आदि कार्यों के कारण योगी सरकार को जनता का समर्थन मिल रहा है यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री संपूर्णानंद जी ने अपनी पुस्तक में जिस आधी अधूरी क्रांति की बात की थी विकास की उसे क्रांति को योगी सरकार पूरी करके जनता का विश्वास प्राप्त कर रही है। प्रदेश में प्रत्येक सेक्टर (कृषि, व्यापार ,सेवा) में योगी सरकार की नियोजित कोशिसों एवं दूरदर्शिता यूपी को आत्मनिर्भरता की ओर ले जा रही है।

जिस समय जिस काम के लिए, प्रतिज्ञा करो ठीक उसी समय पर उसे करना ही चाहिए नहीं तो, लोगों का विश्वास उठ जाता है।

-स्वामी विवेकानंद-

कुँआरी लड़कियाँ

घर के काम से फारिग होकर
इतवार के दिन लड़कियाँ
निगाह दौड़ाती हैं
वैवाहिक विज्ञापनों पर
वे कविताएँ नहीं पढ़तीं
जल्दी से पलट देती हैं कहानी का पन्ना
परहेज करती हैं
लेखों से और ललित निबन्धों से
हाथ में पेंसिल लेकर
वे बड़े ध्यान से पढ़ती हैं
कुँआरों, विधुरों और तलाकशुदा पुरुषों की जरूरतें
और खुद को बार-बार परखती हैं
उनके द्वारा तय की गई कसौटियों पर
किसी को चाहिए लम्बी और गोरी और सुन्दर कन्या
किसी को चाहिए कॉन्वेंट शिक्षित वधू
किसी को चाहिए सम्भ्रांत और प्रतिष्ठित परिवार की लड़की
किसी को जाति के बंधन पसन्द नहीं
जबकि कोई सजातीय पत्नी का इच्छुक है
किसी को दहेज से चिढ़ है
जबकि कोई चाहता है शीघ्र और उत्तम विवाह
जो लड़कियाँ लम्बी नहीं हैं
और गोरी नहीं हैं
और देखने में साधारण हैं
और केवल हिन्दी जानती हैं
और मामूली परिवारों में जनमी हैं
वे बार-बार जाती हैं
ज्योतिषियों के पास
जाती हैं
भाग्य बताने वाली चिड़ियों के पास
जाती हैं
उन दुकानों तक
जहाँ पचास रुपये में आसानी से मिल जाता है
वार्षिक राशिफल
जाती हैं
शहर के हर अच्छे फोटोग्राफर के पास
कहीं भेजने लायक
एक फोटो खिंचाने के लिए

सत्येन्द्र कुमार रघुवंशी

गजल

जो भी कहना है खुल कर कहो,
मन पे बोझा न रक्खे रहो।
हाथ को हाथ सूझे नहीं,
क्यों उजाला-उजाला कहो?
मौज-मस्ती है,संघर्ष है,
तय करो दोस्त! किस ओर हो?
सोच लो चाहे फिर एक बार,
मन में कोई भी दुविधा न हो।
दर्द छलका तो होगी हँसी,
दर्द भीतर-ही-भीतर सहो।
फिर लगेंगे तुम्हारे गले,
फिर अगर उनका वनवास हो।
क्रांति भी एक दिन आएगी,
पहले आवाज तो एक हो।

राजेन्द्र वर्मा, लखनऊ

गजल

कठिन सफर है वफा का, जो चल सको तो चलो।
सियाह रात में तन्हा, निकल सको तो चलो।
बहुत मिलेंगे तुम्हें, दिल से खेलने वाले,
हरेक कदम पे सभी से, संभल सको तो चलो।
बड़ी अजीब है दुनिया, नसीहतों वाली,
इन्हीं पे चलके जो खुद को, बदल सको तो चलो।
ये जो राहें हैं यहां, इसमें सिर्फ कांटे हैं,
अपने पैरों से इन्हें तुम, मसल सको तो चलो।
मीरा बनना भी कहां इतना है आसाँ देखो प्यारे,
विष का प्याला अपने हाथों, निगल सको तो चलो।

अजय अवस्थी

परीक्षायज्ञ के सॉल्वर देवता

शिशिर शुक्ला

हास्य व्यंग्य

एक कहावत सोलह आने सच है कि जिंदगी इम्तिहान लेती है। सत्य तो यह है कि हर एक इम्तिहान अपने साथ एक प्रश्न पत्र लेकर आता है। अब अगर प्रश्न पत्र में पूछे गए सवालों के जवाब आपकी खोपड़ी में विद्यमान हैं, तब तो आप ठहरे हीरो और नहीं तो जीरो। वो जमाना और था जब नौकरी को खेती-बाड़ी के आगे बड़ा तुच्छ समझा जाता था। लेकिन जब से जनसंख्या को दिन दूना रात चौगुना बढ़ने का आशीर्वाद प्राप्त हुआ, तब से जीवन यापन के लिए भी मानो एक बाधा दौड़ से गुजरना पड़ रहा है। सौ की सीधी एक बात कहें तो छोटी से लेकर बड़ी नौकरी को हासिल करने के लिए प्रश्नपत्र के रूप में एक कड़ी अग्निपरीक्षा देनी पड़ती है। दिलचस्प बात तो यह है कि आजकल परीक्षाओं में दो तरह के सॉल्वर पाए जाते हैं। पहली प्रजाति वह है जो परीक्षा से एक घंटे पहले तक अपने शरीर की पूरी ताकत को परीक्षा में झोंकने के पश्चात परीक्षा केंद्र में दाखिल होने का मूड बनाते हैं। परीक्षा केंद्र में दाखिल होते हुए उनके हृदय की धड़कनें सामान्य से थोड़ा बढ़ जाती हैं और परीक्षा कक्षा में पहुंचते ही धड़कनों का ग्राफथोड़ा और बढ़ जाता है। प्रश्न पत्र मिलने की घंटी बजते ही हृदय गति में यकायक उत्थान होता है। चूंकि ये बेचारे लंबे समय से उस अग्निपरीक्षा के लिए खुद को तैयार कर रहे होते हैं, सो प्रश्नपत्र देखकर उनके हृदय की धड़कनों पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। एक खास बात और होती है कि इस प्रजाति के सॉल्वर अग्निपरीक्षा में सफल होने हेतु ईश्वर से बराबर प्रार्थना करते रहते हैं और सफल हो जाने पर तमाम जगह प्रसाद चढ़ाते फिरते हैं। यूं कहें कि ये स्वार्थी स्वभाव के होते हैं और स्वयं के लिए ही परीक्षा में प्रकट होते हैं।

अब बात कर लेते हैं दूसरी प्रजाति के सॉल्वरों की, तो ये परोपकार एवं जनकल्याण की भावना से ओतप्रोत दिव्यात्माएं होती हैं। यह एक अलग की बात है कि इस परोपकार के बदले ये अपना सूक्ष्म चढ़ावा ग्रहण कर लेते हैं। कुछ विशेष अभ्यर्थी परीक्षारूपी युद्ध में शामिल तो कूदकर हो जाते हैं, लेकिन हथियार ढंग से पकड़ना भी नहीं आता। ऐसे अविवेकी लोगों के लिए ये सॉल्वर साक्षात ईश्वर का स्वरूप होते हैं। लेकिन ईश्वर को पाना इतना आसान तो है नहीं, तो भइया इनको प्राप्त करने के लिए अभ्यर्थियों को

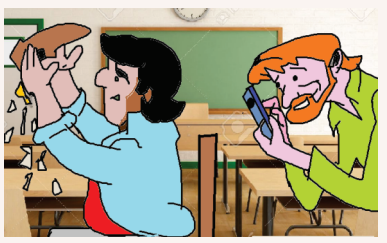

जुगाड़ तुगाड़ की कड़ी तपस्या व साधना करनी पड़ती है। इस कठोर तपस्या के उपरांत उन्हें एक दिव्यगैंग के दर्शन होते हैं। यह गैंग अपनी शर्तों के आधार पर उन अभ्यर्थियों से सॉल्वररूपी ईश्वरदर्शन का सौदा करता है और उन्हें यह विश्वास दिलाता है कि यदि वह हमारे गैंग पर विश्वास रखते हुए आवश्यक नियमों के अनुसार पूजा अर्चना करेंगे, तो निस्संदेह परीक्षायज्ञ में सॉल्वर रूपी ईश्वर का आशीर्वाद उन्हें प्राप्त होगा ही होगा। अब अभ्यर्थी को आशीर्वाद दिलाने के लिए दिव्यगैंग का प्रधान देवता अपने इष्ट सॉल्वर देवता से संपर्क करता है और उन्हें मुंहमांगा चढ़ावा चढ़ाने का वचन देते हुए अभ्यर्थीरूपी भक्त को आशीर्वाद देने के लिए तैयार कर लेता है। यहां एक बात उल्लेखनीय है कि यह आवश्यक नहीं है कि अभ्यर्थी ने जिस देवता के लिए अर्जी लगाई है, उसके दर्शन कर ही पाए, हां आशीर्वाद मिलने की गारंटी सौ फीसदी होती है। परीक्षायज्ञ में अपनी और अपने दिव्यगैंग की मायावी शक्तियों की वजह से ये सॉल्वर देवता परीक्षा कक्षा में अभ्यर्थी के स्थान तक पहुंचने में कामयाब हो जाते हैं और परीक्षा पूर्ण करके अंतरध्यान भी हो जाते हैं। परीक्षा का नतीजा आता है और अभ्यर्थी परीक्षा को पार कर जाता है तथा मन ही मन उस देवात्मा को धन्यवाद देता है।

अब समय हमेशा एक सा तो रहता नहीं। दूसरी बात ये कि परोपकारी व्यक्ति वैसे ही सबकी नजरों में खटकता रहता है। कुछ ऐसा ही आजकल पिछली कुछ परीक्षाओं से इन देवतुल्य लोगों के साथ घटित हो रहा है। सरकार, पुलिस और प्रशासन ये सब अपनी छवि को चमकाने के चक्कर में इन पुण्यात्माओं को सोची समझी साजिश का शिकार बनाकर बेचारे अभ्यर्थियों का भी भविष्य बरबाद कर दे रहे हैं। बहरहाल बड़ी चिंता का विषय है कि अगर इसी प्रकार परीक्षा के दिव्यगैंग और सॉल्वर देवताओं की कार्ययोजनाओं में सरकार और प्रशासन की सेंधमारी चलती रही, तो नौकरी और प्रसिद्धि दोनों उन्हीं के हाथ लगेंगी जोकि गुमान और स्वार्थ में चूर होकर खुद ही सॉल्वर देवता बने बैठे हैं। परहित की पावन भावना से ओतप्रोत ईश्वरीय अवतार सदृश सॉल्वरों और उनके समूह को कोई नहीं पूछेगा।

आत्मा की मुक्ति

लघुकथा

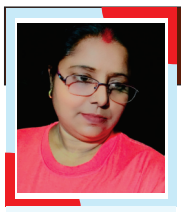

सपना चन्द्रा

मेरी माँ मर गई है, उसे शमशान तक सजा-धजाकर ले जाने की तो सामर्थ्य नहीं है मुझमें, आखिर क्या करूं..? जो इस ठेले से कमाता, पेट की भूख और माँ की दवाई में खर्च हो जाता। कोशिश करता पर कुछ बचा नहीं पाया। बचाता भी किसके लिए, डॉक्टर साहब ने भी तो कहा था ,जबतक दवा-दारू चलेगी यह भी चलेगी। राजाराम अपने मन का संताप घर में छोड़कर पास-पड़ोस से कुछ दया दान की उम्मीद लिए एक घर से दूसरे घर जाता रहा। कुछेक को छोड़ किसी मोटे महाजन ने मदद की कोई पहल न की।जितना मिला वो ऊँट के मुँह में जीरा के समान। उसने अपने ठेले पर माँ के शव को लेटा दिया और चल पड़ा नदी की ओर। वहाँ पहुँचते ही डोम राजा ने कहा- 'इनकी आत्मा को शरीर से मुक्ति दिलाने के लिए अग्नि के हवाले करना होगा। लकड़ियां लानी होगी,चिता सजाई जाएगी तब जाकर अग्नि के हवाले किया जाएगा।' पर कैसे..? 'कड़ियों के लिए पैसे कहाँ हैं डोम राजा !मैं तो अकेला ही इस ठेले पर लेकर आया हूँ जो मेरी रोटी-रोजी का साधन है।' 'फिर तो मुश्किल है ,मैं नहीं कर पाऊँगा मुफ्त में। जो सही लगे वो फिर तुम करो। राजाराम शून्य भरी आँखों से आसमान को एकबार निहारा। फिर उसने अपने कमर में खोंसी हुई दीयासलाई निकाली, जो कभी-कभार बीड़ी की कश लगाने के लिए जलाने के काम आती। ठेला धूं-धूंकर जलता रहा और संवेदनाएँ और सपने सब खाक होती रहे। संभवत: आत्मा मुक्त हो चुकी थी।

भारत देश

देखों सपूत देश के, उनका हुआ मुरीद।
सरहद पर रहते खड़े, कुछ हो गए शहीद।।
मेरे भारत देश की, गाथा बड़ी महान।
महिमा इसकी गा रहा, आज सारा जहान।।
अतिथि हमें अति प्रिय सदा, दुश्मन को दें दंड।
भारत जितना शांत है, उतना बने प्रचंड।।
राम आरती हो यहाँ, होती यहाँ अजान।
आपस में मिलकर रहें, सबका हो सम्मान।।
भारत मेरा देश है, भारत मेरा धर्म।
जन्म यहाँ लूँ मैं सदा, ऐसे हों बस कर्म।।
देशभक्ति के रंग में, रंग लिया है प्राण ।
सरहद के प्रहरी खड़े ,देखों वीर जवान।।
पावन धरती को नमन, करे सभी उद्धार।
हर दिन उत्सव हो नया, होता है त्यौहार।।
वीर सपूतों को सदा, देती माँ आशीष।
देश सदा आबाद हो, कट जाएं कुछ शीश।।
सारे जग में मान हो, विश्व तिरंगा शान ।
यही हमारी जान है, सबका है अभिमान ।।
ऐ मेरे प्यारे वतन, तुझपे दिल कुर्बान ।
तुझसे बढ़ती शान है, तुम हो मेरी जान ।।

मिठु डे
वर्धमान पं. बंगाल

रेशमी रिश्ता

भाईबहिन का रेशमी रिश्ता
मधुर अनोखा ये जज़्बात।
जीवन भर जो साथ चले
बना रहे ये रिश्ता खास।।
मां पिता की अनुपम सौगात
जीवन मधुर बनातीहै।
दुख सुख में मिल जुलकर
रिश्ता खूब निभाती है।।
बीते दिन जब याद करूं तो
मन सुरभित हो जाता है।
अतीत की स्मृतियों से
तन पुलकित हो जाता है।।
भोली मस्ती और शरारत
दिन भर सबको भाते थे ।
तरह तरह के खेल अनूठे
हम सबको हर्षाते थे।।
बात बात में रूठा करते
पल भर में मान जाते थे।
आपस में थे मिल जुल रहते
गलती खूब छुपाते थे।।
भाव भंगिमा और आंखों से
गुप चुप बातें करते थे।
मौन सम्मति से हम सब दोष
सभी के ढंकते थे।।
बीते दिवसों की सुधियां
जब स्मृतियों में आती हैं।
अपने नन्हें मुन्नों की छवि
बचपन की सैर कराती है।।
बाबा के घर पर आते ही
मैदान साफ हो जाता था।
भोले-भाले बन जाते थे
आज्ञाकारी दिखते थे।।
बहिनों को मां बनते देखा,
भाई पिता बन जाते हैं।
विपरीत स्थिति आते ही रिश्ते
नए गढ़ जाते हैं।।
रब से यही दुआ करती हूं
जीवन भर का साथ रहे।
कोई कटुता कभी न आए
भौतिकता न दीवार बने।।

पूर्णिमा बेदार श्रीवास्तव

गीत

चूम पत्थर को आइना करके।
तोड़ देता है दिल बना करके।
आहटें नाचतीं रहीं शब भर,
उसके पांवों की कल्पना करके।
ताड तिल का बना रहा पीछे,
शर्म आती है सामना करके।
हाथ में उसके जिंदगी होगी?
मेरे मिटने की कामना करके।
मुट्ठियाँ तानने का अवसर है,
थक गए हाथ प्रार्थना करके।
हाथ फैला तो मर गए समझो,
कौन जिंदा रहा मना करके।
धूप में जो कमल खिला देखा,
देखना छाँव कुछ घना करके।

कमल मानव

गीत

आज तारो को भेजा है
उसे बुलाने के लिए
जिसने कह रक्खा है
लौट के न आने के लिए
ये वक्त है जो आता है
सिर्फ जाने के लिए
काश, लम्हो को कैद कर लेता
उसे मनाने के लिए
पेड़ की छाँव में बैठे थे साथ
उसे गजल सुनाने के लिए
जमीं पे एक दरख्त है मौजूद
दास्तान ये बताने के लिए

मलय चक्रवर्ती

संगीत शिक्षण में गुरू शिष्य परम्परा का महत्व

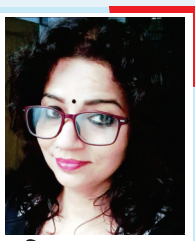

कविता भटनागर

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

इस श्लोक के माध्यम से यह बात पूर्णता स्पष्ट हो जाती है कि जीवन में गुरु का स्थान सर्वोच्चए सर्वोत्कृष्ट व सर्वप्रथम होता है। जी हां! गुरु ही माता के पश्चात स्थान रखने वाला वह मार्गदर्शक होता हैए जो हमारे जीवन में उजाला कर हमें सत्य के ज्ञान की ओर अग्रसर करता है।इसी ज्ञानशाला के अंतर्गत गुरु. शिष्य परंपरा का प्रादुर्भाव होता है। संगीत हृदय की भाषा है यह एक प्रत्यक्ष प्रायोगिक कला है। संगीत में गुरु शिष्य परंपरा का विशेष महत्व है क्योंकि यह निर्विवाद सत्य हैए शिक्षा कोई भी ए कैसी भी क्यों न होए यदि उस शैक्षिक कार्य का आधार गुरु शिष्य परंपरा न होगी तो वह शिक्षा गतिहीनए अस्थिर व दिशाहीन हो जाएगी। वास्तव में गुरु शिष्य परंपरा संगीत शिक्षण की सबसे प्राचीनतम एवं सर्वश्रेष्ठ प्रणाली मानी जाती है। वैदिक काल से ही संगीत शिक्षा गुरु मुख से दी जाती रही है। संगीत की शिक्षा पुस्तकों के माध्यम से या सोशल मीडिया द्वारा प्राप्त नहीं की जा सकती है। अपितु इसकी प्राप्ति का माध्यम गुरु ही होता हैए जो अपने ज्ञान और स्वरों के माध्यम से शिष्यों को ज्ञानवान कर स्वर ज्ञान से परिचित कराता है। इसी परंपरा ने संगीत विद्या को अधिक समृद्ध और संपन्न बनाया है।

'गुरु, विनय और साधना' इन तीन शब्दों के सहयोग से ही संगीत की शिक्षा पूर्णता को प्राप्त होती है।

परंपरा का अर्थ उन संपूर्ण विचारोंए आदतों और प्रथाओं के योग से है जो एक सामूहिक विशेषता है, और पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रहने वाली प्रक्रिया है। जब हम गहनता से गुरु शिष्य परंपरा के स्वरूप पर विचार करते हैं, तो एक सर्वव्यापी मत हमारे सम्मुख आता हैए कि विद्या दान करने वाले गुरु और प्रतिभाशाली शिष्यों के संयोग से ही घरानों का निर्माण व निर्वाहन होता हैए जिनका संगीत में महत्वपूर्ण स्थान है। जब से शास्त्रीय (नियमबद्ध) संगीत का जन्म हुआ, तभी से गुरु शिष्य परंपरा का अनुशीलन किया जाता रहा है।

वास्तव में गुरु शिष्य परंपरा के प्रारंभ का कारण मानवीय आवाज रही ही और उसका माध्यम उसमें पाया जाने वाला स्वर है। स्वर मानव की आवाज का अत्यंत गूढ़धर्म हैए जिसे तालीम द्वारा सांगोपांग संवर्धन कर गुरु अपना गला शिष्य के गले में उतारने का प्रयास वर्षों तक करता है, इसी कारण स्वर लगाने का तरीका व गायकी के अलग–अलग कायदों का एक कभी न टूटने वाला सिलसिला जुड़ जाता हैए जो घरानों का उद्गम स्थल बन जाता है। गुरु शिष्य परंपरा में गुरु को पिता तथा शिष्य को पुत्र का दर्जा प्राप्त होता है और यह इस परंपरा का वंदनवार कहलाता है।

हिंदी सम्मान

लघुकथा

मीरा जैन, उज्जैन

अंग्रेजी के शिक्षक सोमिल, जिनसे शिक्षा ग्रहण कर रहे समस्त विद्यार्थियों की अंग्रेजी अत्यंत सशक्त थी एक-एक विद्यार्थी पर वे बहुत ध्यान देते थे शहर के अन्य स्कूलों में भी पढ़ाने के मामले में उनका और कोई सानी नहीं था , हिंदी दिवस के अवसर पर शिहंदी गौरव सम्मानश् हेतु उनके नाम की घोषणा सुन संबंधित सभी की जुबान पर आश्चर्यमिश्रित प्रतिक्रियाएं उभर आयी-'ये कैसा सर्वे, ये कैसा न्याय, अंग्रेजी पढ़ाने वाले शिक्षक को हिंदी का सम्मान-वगैरह वगैरह।'

यह असंतोष प्रधानाचार्य के कानों तक भी पहुंच गया प्रधानाचार्य ने स्पष्टीकरण देते हुए कहा- 'मैं आप लोगों की व्यथा समझता हूं किंतु इस पुरुस्कार के लिए मैंने ही सोमिल का नाम हिंदी शिक्षा समिति को भेजा था, इतना सुन उपस्थित

समस्त हिंदी शिक्षकों के मुख से एक साथ स्वर प्रस्फुटित हुआ- 'क्यों ?' प्रधानाचार्य ने बड़े ही विनम्र शब्दों में कहा- 'आप सभी उन विद्यार्थियों की हिंदी की परीक्षा ले सकते हैं जिन्हें सोमिल अंग्रेजी पढ़ता है, अंग्रेजी की तरह उनकी कक्षा के विद्यार्थियों की हिंदी भी उत्कृष्ट है कारण मात्र इतना है वे नियमित अपने विद्यार्थियों को 10 वाक्य अंग्रेजी के देते हैं और कहते हैं इसका हिंदी अनुवाद करके लायें जबकि यह उनके कोर्स में नहीं हैं कुछ पालकगणों ने इस संदर्भ में शिकायत भी की थी तब मैंने सोमिल को बुला उससे ऐसा करने की वजह जानना चाहा तो उसने बहुत सुंदर जवाब दिया-'आदरणीय गुरुवर! मै अंग्रेजी का शिक्षक जरूर हूं किन्तु उससे पहले मैं हिंदुस्तानी हूं मुझे अपनी मातृभाषा से बेहद प्यार है हिन्दी भाषा मेरे लिए पूजनीय है मैं नहीं चाहता कि मेरा कोई भी विद्यार्थी हिंदी कमजोर हो अंग्रेजी मेरे जीविकोपार्जन का साधन है तो हिंदी मेरा कर्तव्य।'

ओ शिक्षा के आलोक शिखर

ओ शिक्षा के आलोक शिखर,
ओ मानवता के कर्णधार।
ओ राष्ट्र सभ्यता के प्रतीक,
ओ नव भारत के मूर्तिकार।
तुम नवल चेतना की धारा,
तुम भारत भाग्य विधाता थे।
तुम पावन परम पुनीत और,
संस्कृति की अनुपम गाथा थे।
तुमने भारत की माटी पर,
शिक्षा का दीप जलाया था।
तुमने स्वदेश के कण कण में,
बस ज्ञान पुंज बिखराया था।
भारत की बगिया में तुमने,
शिक्षा के सुमन खिलाए थे।

कुलदीप दीपक

तुमने निज वाणी से अनुपम,
युग बोधक गीत सुनाए थे।
भारत के कण कण में तुमने।
था भाषा का माधुर्य भरा।
सूखे उपवन में तुमने ही।
बौद्धिकता का मकरंद भरा।
तुम शिक्षक केवल नहीं श्रेष्ठ ,
शिक्षा के गहरे सागर थे।
तुम राधा कृष्णन नहीं सिर्फ,
भारत के नटवर नागर थे।
हम आज जन्मदिन पर तुमको,
सब मिलकर शीश झुकाते हैं।
पआवनतम चरणों में तेरे,
श्रृद्धा के सुमन चढ़ाते हैं।

आखिर 5 सितंबर को ही क्यों मनाया जाता है शिक्षक दिवस?

डा. रामनिवास गुप्ता

5 सितंबर को हर साल भारत में षिक्षक दिवस के तौर पर मनाया जाता है। इस दिन स्कूलों तरह-तरह के कार्यक्रम होते हैं और बच्चे शिक्षक बनते हैं। एक शिक्षक का किसी भी छात्र के जीवन में खास महत्व होता है। कहा जाता है कि किसी भी बच्चे के लिए सबसे पहले स्थान पर उसके माता-पिता और फिर दूसरे स्थान पर शिक्षक होता है। शिक्षक एक बच्चे के भविष्य में महत्वपूर्ण योगदान देता है। एक शिक्षक के बिना छात्र का जीवन अधूरा रहता है। ऐसे में आज हम आपको बताने जा रहे हैं कि आखिर हर साल 5 सितंबर को शिक्षक दिवस क्यों मनाया जाता है और इन दिन को मनाने के पीछे क्या महत्व है।

भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिन (5 सितंबर) भारत में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिन को 1962 से शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने अपने छात्रों से जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने की इच्छा जताई थी। दुनिया के 100 से ज्यादा देशों में अलग-अलग तारीख पर शिक्षक दिवस मनाया जाता है। देश के पहले उप-राष्ट्रपति डॉ राधाकृष्णन का जन्म 5 सितंबर 1888 को तमिलनाडु के तिरुमनी गांव में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। वे बचपन से ही किताबें पढ़ने के शौकीन थे और स्वामी विवेकानंद से काफी प्रभावित थे। राधाकृष्णन का निधन चेन्नई में 17 अप्रैल 1975 को हुआ था।

जब डॉ एस राधाकृष्णन भारत के राष्ट्रपति बने तो उनके कुछ छात्र व मित्र उनके पास पहुंचे और उनसे अनुरोध किया कि वे उन्हें अपना जन्मदिन मनाने की अनुमति दें। उन्होंने उत्तर दिया कि मेरे जन्मदिन को अलग से मनाने के बजाय इस 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाए तो यह मेरे लिए गौरवपूर्ण सौभाग्य होगा। तब से उनकी जयंती यानी 5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाया जाने लगा।

शिक्षक दिवस को चीन से लेकर, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, अल्बानिया, इंडोनेशिया, ईरान, मलयेशिया, ब्राजील और पाकिस्तान तक शामिल हैं। हालांकि हर देश में इस दिवस को मनाने की तारीख अलग-अलग है। जैसे कि चीन में 1 सितंबर तो अमेरिका में छह मई, ऑस्ट्रेलिया में अक्तूबर के अंतिम शुक्रवार, ब्राजील में 15 अक्तूबर और पाकिस्तान में पांच अक्तूबर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है।

ईश्वर तुल्य गुरु को नमन!

करूणा चतुर्वेदी

भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय में भी समस्त संसार में गुरु वंदनीय और अभिनंदनीय रहा है, गुरु वह औषधि है जो अज्ञानता की जड़ता को पल में समाप्त कर उसे श्रेष्ठ और विकास शील बनाता है

गुरु का आशीर्वाद और अनुग्रह जिसे मिल जाता है, उसका जीवन कृतार्थता से भर आत्म दर्शन और परमात्म दर्शन करने लगता है। गुरु अज्ञानता के सागर को पार कराने में नाविक का दायित्व निभाते है। गुरु एक तरह का बांध है जो परमात्मा और संसार के बीच, शिष्य और भगवान के बीच सेतु का काम करते है, क्यूंकि गुरुओं की छत्रछाया में से निकलने वाले कपिल, गौतम, पाणिनि आदि अपने विद्या वैभव के लिए आज भी संसार में

प्रसिद्ध है।

गुरु पूर्णिमा के चाँद जैसा होता है,क्योंकि गुरु के पास अनेक अनुभवो का अक्षय कोश होता है, जिससे अपने शिष्य के जीवन में आने वाली कठनाईओ का आभास कर के शीघ्र नष्ट कर स्वयं से भी उच्च शिखर पर बिठाने की शक्ति रखता है। गुरु वह कवच होता है जिससे शिष्य अपने आपको सुरक्षित महसूस करता है। गुरु सम्पूर्ण मानव जाति के लिये सुगंधित पुष्प की तरह है जो चारों ओर अपने ज्ञान के सुरभि से महकता है। गुरु अपने शिष्यों को सत्य, न्याय एवं प्रेरणायुक्त उपदेशों से उचित मार्ग पर अग्रसर करता है!

खुद को तकनीकी रूप से अपडेट रखें शिक्षक: योगी

» सीएम ने शिक्षकों को किया सम्मानित

लोक पहल

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि शिक्षक राष्ट्र निर्माता होता है। उनकी भूमिका काफी उल्लेखनीय है। यही वजह है कि समाज में शिक्षकों को विशिष्ट स्थान दिया गया है। उन्होंने कहा कि शिक्षकों का एक पक्ष हर क्षेत्र में वर्तमान पीढ़ी के निर्माण और विद्यार्थियों के मार्ग दर्शन कर राष्ट्र निर्माता बनाने का है तो दूसरा पक्ष भी है। ट्रेड यूनियन की तरह जो शिक्षक, शिक्षण कार्य से विरत होकर अधिकारियों के ही चक्कर काटते रहते हैं। उससे भावी पीढ़ी का भविष्य बर्बाद होता है। ट्रेड यूनियन की पद्धति ने काफी नुकसान किया है।

ऐसे शिक्षकों को समाज भी संदेह की निगाह से देखता है। उनका तिरस्कार करता है। हमें इन दोनों पक्षों को ध्यान में रखकर काम करना होगा। सीएम ने कहा कि दो साल पहले मैंने शिक्षक सम्मान समारोह स्थगित कर दिया था क्योंकि जब सूची सामने आई तो उसमें ऐसे शिक्षकों के नाम थे जो दिन भर भ्रमण करते दिखते थे। वह कभी पढ़ाते नहीं थे। नींव को खोखला करने का काम कर रहे थे। आज उन शिक्षकों को सम्मानित किया जा रहा है, जिन्होंने पठन पाठन के क्षेत्र में कुछ नया किया है। उन्हें सम्मान करके मुझे भी खुशी मिल रही है। सीएम ने कहा कि शिक्षकों के ऊपर एक बड़ी जिम्मेदारी राष्ट्र निर्माण की है। आप भी समय के अनुरूप खुद को तैयार करें। यह दौर तकनीकी का है।

शिक्षक दिवस की पीएम मोदी ने दीं शुभकामनाएं

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शिक्षक दिवस के अवसर पर आज राष्ट्र निर्माण में शिक्षकों के योगदान को सलाम किया और पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन को श्रद्धांजलि अर्पित की। पांच सितंबर 1888 को तमिलनाडु में जन्मे डॉ। राधाकृष्णन को भारतीय संस्कृति के संवाहक, प्रख्यात शिक्षाविद और महान दार्शनिक के तौर पर जाना जाता है और उन्हीं के सम्मान में इस दिन को 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाया जाता है। पीएम मोदी ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' (पहले ट्विटर) पर जारी एक पोस्ट में कहा कि शिक्षक हमारे भविष्य और प्रेरणादायक सपनों को गढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षक दिवस पर हम उनके अटूट समर्पण और समाज पर उनके प्रभाव के लिए उन्हें सलाम करते हैं। डॉ। एस राधाकृष्णन को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि। राष्ट्रीय प्रधानमंत्री ने इसके साथ ही एक वीडियो भी साझा किया, जो सोमवार को राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार के विजेताओं से उनके संवाद से संबंधित है। देशभर से कुल 75 शिक्षकों को इस पुरस्कार के लिए चुना गया है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू मंगलवार को एक समारोह में इन शिक्षकों को सम्मानित करेंगी।

मेरे स्कूल की एक बच्ची।
नाम है भोली, सीधी सच्ची।।
पढ़ने में है, बहुत ही अच्छी।
रोज समय से पढ़ने आती।।
सभी काम वह करके लाती।
सब गुरुओं को है वह भाती।।
घर पर जाओ चाय पिलाती।
और साथ में खाना लाती।।
बड़े प्यार से हमें खिलाती।
हम भी बड़े प्यार से खाते।।
फिर अपने घर पर आ जाते।
गुरुओं का करते सम्मान।।
ऐसे बच्चे बने महान।
गुरुओं से ले करके ज्ञान।।
छू लें अम्बर और आसमान।।

पुरुषोत्तम अवस्थी

शिक्षक दिवस

शिक्षक दिवस आज है आया।
मैं ने तो है केक मँगाया।
बच्चों ने है क्लास सजाया।
फिर सर जी को है बुलवाया।
केक काट कर सबने खाया।
सर जी को भी खूब खिलाया।
बच्चों ने जो गिफ्ट दिया है।
हँस कर सर ने उसे लिया है।
बच्चों के मन को बहलाते।
हम हैं शिक्षक दिवस मनाते।
जीने का आधार दिया है।
हमको अपना प्यार दिया है।
सर जी वही हमारे हैं जो।
आसमान के तारे हैं जो।
जिन्होंने हमको ज्ञान दिया है।
हमने उन्हें प्रणाम किया है।

कु. आरजू सिंह

श्री कृष्णा

रोहिणी नक्षत्र भादव अष्टमी
जन्म लिए कन्हाई
देवकी यसोदा के नंदन
कत तोर करब बड़ाई
हे वासुदेव हे नंद किशोर
कत तोर करब बड़ाई
सोलह कला परिपूर्ण अवतरित
नटखट नटवर चतुराई
ग्वाल बाल संग घुल-मिल
गोपीयन चीर चुराई
दूध दही माखन मिश्री
घर घर जाईक खाई

पुतना दुष्ट बकासुर मार
स्वर्ग के राह पठाई
उग्रसेन सुत कंस दुष्ट को
तूने पछाड़ गिराई
शेषनाग मस्तक पर माधव
अदभुत नाच दिखाई
राधा के संग प्रीत निभाकर
प्रेम की अलख जगाई
नटवर साँवर मुग्ध मुदित मन
गोपीयन देख लुभाई
शिशुपाल सौ माफकर
सहिष्णुता के पाठ पढ़ाई
सीमा पार कर सुतसुभा सुत तब
सुदर्शन चक्र चलाई
अभिमानी घर पकवान छोड़
प्रभु साग विदुर घर खाई

हे द्वारकाधीश सुनो मेरे मीत
केशव मेरो लाज बचाई
चीख सुनी भई व्याकुल
प्रभु तूने चीर बढ़ाई
सुदामा के पग धोए कभी
कभी युधिष्ठिर से धुलवाई
कर्म प्रधान की पाठ पढ़ाई
राजकुमारी एक बनी योगिनी
बनी तेरी प्रेम दीवानी
भक्तिनी मीराबाई को प्रभु
तूने कंठ लगाई
कर्मयोग,भक्तियोग,ज्ञानयोग
की पाठ सिखाई
भक्तिभाव जो शरण में आए
प्रभु तूने हृदय लगाई

हे नटवर नागर नंदकिशोर
कत तोर करब बड़ाई

रानी प्रियंका वल्लरी
हरियाणा

श्याम नाम से कर सखी अब मेरा श्रृंगार

श्याम नाम से कर सखी अब मेरा श्रृंगार
अंग अंग लिख दे सखी श्याम के नाम हजार।
मुख पै 'मदनगोपाल' लिख, नैनन 'नंदकिशोर'।
कर्ण पै 'केशव' लिख सखी, मन में 'माखनचोर'।
'श्याम' शीश पै लिख सखी, दन्त 'द्वारिकाधीश'।
गालन 'गिरधारी' लिखौ, पीठ 'पीताम्बर ईश'।
सांस सांस में 'साँवरे', ग्रीवा में 'गोपाल'।
अधरन 'अच्युत' लिख सखी, उर 'यशुदा को लाल'।
'केशव' केशन पै लिखौ, वेणी 'वेणुगोपाल'।
मस्तक पै 'मनमोहना', नाक पै 'नन्द को लाल'।
ठोढी पै 'ठाकुर' लिखौ, नाभि पै 'नटवरनन्द'।
'कमल नयन' कटि लिख सखी, कर पै 'परमानन्द'।
'पद्मनाभ' पलकन लिखौ, पुतरी 'प्यारे ईश'।
अंगुरिन पै 'अनिरुद्ध' लिख रोम मै 'राधे श्याम'।
नख नख 'नटखट सांवरे', है जाय तन ब्रजधाम।

सुमन पाठक

सूर्य मंदिर की तर्ज पर बना है मुड़िया कुर्मियत का 'श्री राधा कृष्ण मंदिर'

डा. विकास खुराना
इतिहासकार

शाहजहांपुर। शाहजहांपुर धर्म भूमि है। शास्त्र कहते है कि नदियों के मध्य भूमि शिव भूमि है। जिले भर में भगवान शिव भगवान राधा कृष्ण दुर्गा माता और देवियों को समर्पित अनेक बड़े छोटे मंदिर हैं तक अपनी ऐतिहासिकता को प्रदर्शित करते हैं जैसे कि भगवान परशुराम मंदिर जलालाबाद सुनर घाट मंदिर बांदा टिकोला देवी मंदिर जिसकी ऐतिहासिकता भारत कल तक जाती है इसी प्रकार शहर शाहजहांपुर में भी अनेक अनेक मंदिर है भगवान विश्वनाथ यहां के नगर के आराध्य देव हैं भगवान बनखंडी नाथ बाबा चौक श्रीनाथ स्वयंभू शिव है इन मंदिरों में रोजाना ही भजन कीर्तन प्रभात फेरिया सत्संग कथाओं इत्यादि के माध्यम से नगर का माहौल शिव में बना रहता है इसी प्रकार शहर में अनेक इंद्र भगवान राधा कृष्ण को समर्पित हैं जिनमें रामनगर कॉलोनी का श्री कृष्ण मंदिर श्री कृष्णा नगर कॉलोनी का भगवान राधा कृष्ण मंदिर अनेक अनेक मंदिर चौक क्षेत्र में जो

मन्दिर में हैं 13 गुम्बद और 52 दरवाजे

भगवान राधा कृष्ण को समर्पित हैं उनकी ऐतिहासिकता 3 साल पहले तक की है मिर्जापुर में का राधा कृष्णा शाहजहांपुर पर्क का अद्भुत मंदिर है।

शाहजहांपुर से बंडा रोड पर शहर से लगभग 4० किलोमीटर दूर, बनिगवां मोड़ से 3 किलोमीटर पूर्व में मुडिया कुर्मियात गाँव का राधा स्वामी मंदिर ग्रामीणों के मुताबिक लगभग 4 वर्ष पुराना है। मंदिर में कुल 13 गुम्बद और प्रत्येक गुम्बद पर 4 दरवाजे के हिसाब से 52 दरवाजे हैं। प्रत्येक गुम्बद के नीचे एक अलग मूर्ति स्थापित है। गर्भ गृह के नीचे लगभग 2.5 फिट की पीतल की भगवान राधा स्वामी की प्रतिमा विराजमान है। ग्रामीणों के मुताबिक लगभग1०- 12 वर्ष पूर्व एक अष्ट धातु की सैकड़ों वर्ष पुरानी प्रतिमा चोरों द्वारा चुरा ली गई। जिसका आज तक कोई पता ना चल सका। जिसके उपरांत ही वर्तमान पीतल की प्रतिमा स्थापित की गई। मंदिर के मुख्य गुम्बद की चोटी आज भी अष्ट धातु से मढ़ी हुई है। मंदिर का द्वार प्रतिदिन रात को 8 बजे पूजा अर्चना के लिए खोला जाता है। पूरे मंदिर के सभी दरवाजों को साल में एक बार जन्म अष्टमी के दिन खोल जाता है। फिर जन्म अष्टमी के आठवें दिन सभी मूर्तियों को गाँव में लगने वाले राधा स्वामी के मेले के दिन निकालकर उनकी साफसफाई और स्नान के उपरांत एक वर्ष तक के लिए पुन: प्रतिष्ठित कर दिया जाता है। मंदिर की सुरक्षा और मरम्मत के लिए मंदिर के नाम 5-6 एकड़ जमीन भी है लेकिन अफ सोस प्रशासन और ग्रामीणों की उदासीनता के चलते एक भव्य धरोहर धीरे धीरे अपने निर्वाण की ओर अग्रसर है।

सकल ब्रह्मांड रहता कृष्ण में

जगत मिथ्या बताया है न यूँ भी।
सकल ब्रह्मांड रहता कृष्ण में ही।
रचाया रास ही केवल नहीं है,
बचाई लाज तुमने द्रोपदी की।
अनोखा रूप लीलाएँ अनोखी,
न छवि है और कोई कृष्ण जैसी।
घुसे यमुना में अपनी गेंद लाने,
सजा तब बासुकी को मौत की दी।
विरत जब युद्ध से अर्जुन हुए तब,
दिखाया दिव्य अपना रूप असली।
कभी जब तान छेड़ी बाँसुरी की,
हुईं हैं गोपियाँ बेसुध ही सारी।
बँधी थी कृष्ण के ही प्रेम में वो,
सुनी है 'ज्ञान' मीरा की कहानी।

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'

आया माखनचोर

भादों की अंधेरी रात में!
उस भरी बरसात में!
जब छाए बादल घनघोर!
देखो आया आया माखन चोर!
अमर हुई यसोदा की ममता!
जिसकी कहीं मिले ना समता!
कान्हा -मैया की चर्चा है चहुँ ओर!
देखो आया आया माखन चोर!
लूट लूट कर माखन खाया!
ग्वाल -बाल संग खेल रचाया!
उठाया गोवर्धन को झुका इंद्र का जोर!
देखो आया आया माखन चोर!
गोकुल में राक्षस संहारे!
जितने दुश्मन थे सब हारे!
वृंदावन में गैयन के संग नाचे मोर!
देखो आया आया माखन चोर!
गोपियों का वह मन बसिया!
गोकुल का छलिया रंग रसिया!
राधा के कर में उसके मन की डोर!
देखो आया आया माखन चोर!
लूट लिया दिल बंसी बजा के !
अपना बनाया रास रचा के!
छोड़ गया वह निर्मोही चितचोर!
देखो आया आया माखन चोर!

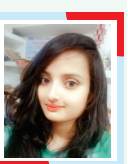

दामिनी शुक्ला

डा. श्रीकांत मिश्रा

अनन्य प्रेम के अतिरेक से आज भी प्रकट होते हैं श्रीकृष्ण

योग योगेश्वर श्री कृष्णा को भारतीय उपासना पद्धति में लीला पुरुषोत्तम माना जाता है। भारतीय दर्शन की बड़ी-बड़ी ख्यातिलब्ध पुस्तकें यदि न भी होती, तो भी मात्र श्रीमद्भागवत गीता के पारायण से ही मानव आदर्शों के उच्च शिखर पर आसीन होता। गीता धार्मिक पुस्तक मात्र नहीं है बरन भारतीय जीवन पद्धति का महाग्रंथ है। इस ग्रंथ में ज्ञान की सुरसरि को प्रवाहित करने वाले सर्वात्मा श्रीकृष्णा प्रेम-प्रावल्य से प्रत्यक्ष प्रगट होते हैं। गीता में अपने श्रीमुख से ही कहते हैं -पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति। तदहंभक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मन:।।9.26 अर्थात् जो कोई भक्त मेरे लिए प्रेम से पत्र, पुष्प, फल, जल आदि अर्पण करता है, उस शुद्ध बुद्धि निष्काम प्रेमी भक्त का प्रेम पूर्वक अर्पण किया हुआ वह पत्र-पुष्पादि मैं सगुण रूप से प्रकट होकर प्रीति सहित खाता हूँ। परमात्मा की इस सृष्टि में प्रेम जैसा दिव्य गुण दूसरा है भी नहीं, प्रेम के प्रकट होने पर मनुष्य के दोष तो स्वतरू ही तिरोहित होने लगते हैं, और वह सद्गुणों की निवास स्थली हो जाता है। ठीक ही कहा गया है कि 'व्याध का कौन-सा (अच्छा) आचरण था ? ध्रुव की आयु ही क्या थी ? गजेन्द्र के पास कौन-सी विद्या थी ? विदुर की कौन-सी उत्तम जाति थी ? यादव पति उग्रसेन का कौन-सा पुरुषार्थ था ? कुब्जा का ऐसा क्या विशेष सुन्दर रूप था ? सुदामा के पास कौन-सा धन था ? माधव तो केवल भक्तिसे ही सन्तुष्ट होते हैं, गुणोंसे नहींय क्योंकि उन्हें भक्ति ही प्रिय है।'

संपूर्ण सृष्टि में प्रेम एक ऐसा कारक है जो मनुष्य को मनुष्य से, मनुष्य को आत्मा से, मनुष्य को परमात्मा से, अधिक क्या कहूं जीव को जीव से आबद्ध करता है। जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि। बंदउँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि यह घोषणा तो प्रेम ही कर सकता है। प्रेमरस से छके भक्त भ्रमर तो सर्वत्र भगवंत के मुखारविंद पर ही आसक्त हो सदैव ही दर्शन की लालसा रखते हैं -बाटनमें घाटनमें बीथिनमें बागनमें, बृच्छनमें बेलिनमें बाटिकामें बनमें। दरनमें दिवारनमें देहरी दरीचनमें, हीरनमें हारनमें भूषनमें तनमें।। काननमें कुंजनमें गोपिनमें गायनमें, गोकुलमें गोधनमें दामिनमें घनमें। जहाँ-जहाँ देखौं तहाँ स्याम ही दिखाई देत, सालिगराम छाइ रह्यो नैननमें मनमें कहि न जाय मुखसौं कछू स्याम-प्रेमकी बात। नभ जल थल चर अचर सब स्यामहि स्याम दिखात ब्रह्म नहीं, माया नहीं, नहीं जीव, नहिं काल। अपनीहू सुधि ना रही, रह्यौ एक नँदलाल को कासों केहि बिधि कहा, कहै ह्वदैकी बात। हरि हेरत हिय हरि गयो हरि सर्वत्र लखात लीला पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण ने यह प्रेम की महिमा संपूर्ण मानवता के कल्याणार्थ ही गाई है। आज संपूर्ण मानवता पर क्रूरता के काले बादल छाए हुए हैं। अनाचार ने अपने पैर पसारे हुए हैं,मानवता कराह रही है, सम्पूर्ण विश्व निजी स्वार्थों से प्रेरित होकर युद्धरत है, मानवता पर दानवता भारी होती जा रही है, शांति पर युद्ध आंखें तरेर रहा है। परहित पर स्वार्थ हावी है। सच मानिए मानवता कलंकित हो रही है। यदि मोह

का निवारण और प्रेम का विस्तारण नहीं हुआ तो भविष्य के उज्ज्वल होने की सम्भावना भी नहीं होगी। प्रेम के सच्चे अर्थ को समझना और मानव मात्र से प्रेम का व्यवहार करना यही तो गीता के उपदेश का सार है, इस उपदेश को मानने वाला ही सच्चा उपासक कहा जाता है। स्वार्थ से अंधी मानवता अपने स्वार्थ की पूर्ति में प्रेम का प्रदर्शन करती है यह प्रेम नहीं बरन मोह है। पति-पत्नी, पिता पुत्रादिक जितने भी संसारिक संबंधों में स्वार्थ आधारित प्रेम का आश्रय है वह सब बंधन कारक है। यदि यही संबंध-संबंधी प्रेम निरूस्वर्थ भाव से हो तो मुक्ति कारक बन जाता है।

प्रेम की ऐसी परिपाटी है, जब तक वह स्वार्थ से लिप्त रहता है तब तक उसमें दिव्यता नहीं आती, जब वह स्वार्थ रहित हो जाता है तब तो उसकी दिव्यता-भव्यता जग जाहिर है परम भक्त ध्रुव का पिता प्रेम जब स्वार्थ रहित हुआ तो ईश्वर को प्राप्त हुए, ऐसी गोपियां निश्चय ही धन्य हैं 'जिन का चित्त निरन्तर भगवान् श्रीकृष्ण में ही लगा हुआ है, जिनकी बुद्धि भगवान में ही अनुरक्त है, जिनका कण्ठ प्रेमाश्रुओं के कारण गद्गद हो रहा है और जो दूध दुहते, दही मथते, धान कूटते, घर लीपते, बालकों को झूला झुलाते, रोते हुए बालकों को चुप कराते, उन्हें नहलाते-धुलाते, घरोंको झाड़ते - बुहारते - सारे काम करते समय भगवान् के ही गुणों का गान करती रहती हैं, वे बृज की गोपियों धन्य हैं। 'गोस्वामी तुलसीदास का पत्नी प्रेम जब टूटा तो यही प्रेम वैश्विक होकर सीयराम मय सब जग जानी की परिकल्पना से परिपूर्ण हो परमात्मा श्रीराम से एकाकार हो गया। मीरा ने कृष्ण प्रेम में सांसारिकता से मुंह मोड़कर प्रेम के सर्वोच्च पद को प्राप्त किया। आज भी ऐसे सैकड़ो उदाहरण भारत में विद्यमान है जिनका प्रेम अद्भुत और अनुकरणीय है। वृंदावन में राधे-राधे कृष्ण-कृष्ण कहकर प्रेम विह्वल हो कर रोती साधु-संतों की टोलियां सहज दृष्टिगोचर हो जाती है। इतना ही नहीं सात समंदर पार से श्रीकृष्ण प्रेम रस में निमग्न विदेशी संतजन यहां राधे कृष्णा राधे कृष्णा नाम कीर्तन करते और मूर्छा खाकर गिरते देखे गए यह आधुनिक गोप गोपियां नहीं तो क्या है, यह प्रेम की पराकाष्ठा नहीं तो क्या है? आज तक ऐसा कभी सुना नहीं गया कि प्रेम से किसी का अहित हुआ हो, ऐसे ही मोह से किसी का हित नहीं हुआ। प्रेम विश्व शांति का मार्ग है, प्रेम भक्ति का मार्ग है, प्रेम ज्ञान का मार्ग है, प्रेम शक्ति का मार्ग है, प्रेम शांति का मार्ग है, प्रेम आनंद का मार्ग है, प्रेम ही मानवता का निघंटु है, जिसकी ध्वनि से दानवों में भी मानवता का जागरण हो उठता है। प्रेम से संसारी मनुष्य के प्रत्येक क्रियाकलाप दिव्या हो जाते हैं। वह परहित के लिए ही सोचता है, परहित के लिए ही करता है, परहित के लिए ही चिंतित रहता है, और परहित का ही लक्ष्य लेकर अपने कार्यों को पूर्ण करता है, यही इस मनुष्य को दिव्यता प्रदान करता है। भारतीय संतों की दिव्य परंपरा में प्रेमा भक्ति का बहुत महत्व है। प्रेम ही तो है जो कण-कण में बसे ईश्वर को भी प्रकट होने के लिए वाध्य कर देता है।सभी देवताओं के पूछने पर कि परमात्मा कहां मिलेंगें, महादेव शिव उनसे कहते है हरि सर्वत्र व्याप्त है वे प्रेम से प्रकट होते हैं- हरि व्यापक सर्वत्र समाना। प्रेम ते प्रकट होहि मैं जाना।।

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहॉपुर, प्रधान संपादक अरूण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहॉपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहॉपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहॉपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक-सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहॉपुर होगा।

गुरू जी के घुटने

अयोध्या प्रसाद

गुरूजी के घुटनों में पिछले कुछ महीनों से दर्द शुरू हो गया था। रह रह कर गुरू जी को अपने अध्यापन काल के स्वर्णिम दिन याद आ जाते जब शिष्यगण चरण न छूकर घुटना स्पर्श करके ही पांय लागूं गुरू जी कहकर आशीर्वाद की कामना में उनका मुंह ताकते रहते थे। कभी कभी गुरू जी मौनी आशीर्वाद देते थे। वे शिष्य के सिर पर हाथ फेर देते तो शिष्य को पता चल जाता कि जरूर मुंह में किसी ऐसी चीज का वास है, जिसकी वजह से गुरू जी बोल पाने में असमर्थ हैं, इसलिए ऐसा हुआ .....और आशीर्वाद प्राप्त हो जाता था। गुरू जी को दर्द की जड़ में शिष्य ही नजर आते जबकि वैद्य जी शिष्यों के घुटना स्पर्श सम्बन्धी कारण से सहमत नहीं थे। गुरूजी से जब कभी कोई घुटने के दर्द के बारे में पूछता तो मुस्कराकर बात टाल जाते। वे मन ही मन शिष्यों पर दांत पीसते कि वे टाइट पैंट पहनकर आते थे तो ज्यादा झुकने से उसकी सिलाई का चरित्र उधड़ने का डर रहता था इसलिए चरणों की जगह घुटनों से ही काम चला लेते थे जिसका खामियाजा अब उनको भुगतना पड़ रहा था। बुढ़ापे में यदि घुटने ही साथ छोड़ दें तो बाकी का जीवन कटना बड़ा मुश्किल हो जाता है। घुटनों पर पूरे शरीर का दारोमदार निर्भर करता है। घुटने जवाब दे दें तो शरीर कितना भी सुंदर क्यों न हो, निरर्थक ही साबित होता है। ....वाकर का सहारा लेना पड़ता है। .... शिष्यों का ध्यान तो घुटनों पर ही रहता था। गुरू जी भी आशीर्वाद देने के चक्कर में यह भूल ही जाते थे कि शिष्य चरणों के बजाए घुटनों पर ही स्पर्श की ठोकरें दे रहा है।

जीवन भर गुरू जी शिष्यों को ज्ञान बांटते रहे। बदले में शिष्य उनके चरणों की बजाय घुटनों का स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त करते रहे। आज सुबह से ही उनके वाट्सऐप पर गुरू की महिमा बखान करने सम्बन्धी कोटेशन और गुरू के चरण स्पर्श करने वाले फोटो उन्हें प्राप्त हो रहे थे। वे भी प्रत्युत्तर में आशीर्वाद देने वाला चित्र भेजकर अपना आशीर्वाद बांटते जा रहे थे। तभी उन्हें एक मैसेज प्राप्त हुआ कि आज शाम को 10-12 पुराने शिष्य उनके साक्षात् दर्शन के लिए उनके निवास पर पहुंच रहे हैं। मैसेज पढ़ते ही गुरू जी के घुटने का दर्द बढ़ गया। इतने शिष्यों का एक समय में घुटना स्पर्श की कल्पना उन्हें अंदर तक हिला गया। घुटने के दर्द की वजह से वे लाठी टेकते टेकते अपने नौकर के साथ बारामदे को संवारने में जुट गए। वे निर्देश देते जाते और नौकर काम को अंजाम देता जाता। दोपहर तक साफ सफाई और साज सज्जा का काम पूरा कर लिया फिर एक वैद्य जी से लाया हुआ तेल घुटनों पर मालिश करने लगे।

शाम को शिष्यों का आना हुआ तो पूरा घर जैसे कोलाहल से भर गया। हंसी ठहाके गूंजने लगे। अध्ययनकाल के समय को याद कर सभी आनंद विभोर हो रहे थे। विनोद के क्रम में शरारती रहे एक छात्र ने गुरू की महिमा के बारे में अपने अनुभव साझा किए - गुरू जी के चरणों का महात्म्य मैं बचपन से सुनता चला आ रहा था। गुरू गोविन्द दोउ खड़े, काके लागूं पांय ! इस दोहे ने मेरे जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन ला दिया था । मुझे यह ज्ञात हो गया था कि सफलता के वृक्ष में बीज स्वरूप गुरू जी ही रहते हैं। विद्यार्थी जीवन के शुरूआत से ही माता पिता की आज्ञा का पालन करते हुए मैंने गुरूजी के चरणों का महात्म्य जान लिया था। मुझे यह ज्ञान प्राप्त हो गया था कि गुरू जी के चरणों को स्पर्श करने से आशीर्वाद मिलता है, इसलिए विद्यालय पहुंचते ही कक्षा में जाने के पहले गुरू जी के चरणों की तलाश करता था और उनके चरणों का स्पर्श करने के बाद ही कक्षा में प्रवेश करता था। इस पर सभी एक दूसरे को देखकर मुस्कराने लगे । तभी नौकर ने जलपान लाकर बारामदे में पड़ी मेज पर रख दिया। गुरूजी ने जलपान कराकर सभी का सत्कार किया। जब शिष्यों को गुरू जी के घुटने के दर्द की गम्भीरता के बारे में पता चला तो सभी अफ्सोस जाहिर करने लगे और रायचंद की भूमिका में आ गए। कोई जोड़ों के दर्द वाला तेल मालिश करवाने, कोई योग के उपयुक्त आसानों , कोई घुटनों की एक्सरसाइज, कोई होमियोपैथ, कोई आयुर्वेद और कोई एलोपैथ की दवाएं सेवन का मशविरा दे रहा था। गुरू जी की शुभचिंता की कड़ी में कइयों ने तो डाक्टरों और फीजियोथेरेपिस्ट के नाम, पते और मोबाइल नम्बर भी लिखकर दे दिए । उनकी सलाहों से गुरू जी पूरी तरह कन्फ्यूज हो चुके थे। उन्हें लगा कि जब ये शिष्य थे तब भी कष्ट दे रहे थे और आज नौकरी चाकरी करने के बाद कन्फ्यूज कर रहे हैं। शिष्य की प्रवृति जो भी हो.... गुरू को तो आशीर्वाद देने के कर्तव्य का पालन करना ही है।

गजल

दोस्ती में जो दगा करने लगे।
वो मेरी नजरों से हैं गिरने लगे।
दोस्त हो तो हक निभाओ दोस्त बन,
गर्दिशों में जब कभी घिरने लगे।
जिस कदर बर्बाद मुझको कर गए,
हम तुम्हारी याद से डरने लगे।
देखकर गुमसुम ये दुनिया टोकती,
इसलिए हम मौज में फिरने लगे।
बन गए 'ऋतुराज' तब सबकी पसंद,
जबसे सबकी हाँ में हाँ भरने लगे।

विकास सोनी 'ऋतुराज'

जागृति

सतर्क और चौकस होकर,
रहने की कला सीखने में,
तत्परता से आगे बढ़ने की
कोशिश करते रहना चाहिए,
सफलता और समृद्धि को पाने में,
इस तंत्र की महत्ता को,
जरूरी से समझनी चाहिए,
यह जीवन में खुशहाली लाने में,
मदद करता है,
सफल होने की सम्भावना को,
प्रशस्त करने में सबसे आगे रहता है।
जीवन की परमगति में,
इसकी बड़ी जरूरत है,
सुखद अहसास और सुकून
देने वाली ताकत बनकर,
यह बड़ी जरूरी ताकत है,
यह आगे बढ़ने की एक उन्नत प्रयास है,
सफलता और समृद्धि को,
इसी बजह से मिलती आश है,
यह सफल परीक्षण की कुंजी है,
जिन्दगी की पहली कुंजी है।
यह जीवन में खुशहाली लाने का,
बेहतरीन ढंग है,
सफल होने की जरूरत और सत्संग है।

डा. अशोक, पटना

एक बेटी की कहानी, कह रही उसकी जुबानी

सुनो, सुनो, सुनो आओ
सब एक कहानी सुनो,
ये कहानी है एक बेटी की
उसकी ही जुबानी सुनो।
इस कहानी से उस बेटी
की जिंदगानी सुनो।।
बेटी थी बड़ी सयानी सी,
थोड़ी नटखट, थोड़ी शैतानी सी,
उसकी जिंदगी में न कोई रवानगी थी,
जिंदगी जीने में वो महारानी थी।
इस कहानी की भी अपनी राम कहानी थी,
उस महारानी की जिंदगी में भी कुछ विरानी थी।
दिन बीते, रात बीती, बीते महीने, साल,
जीती थी सपनों की दुनिया में,
यही उसका हाल, सपनों
से जिंदगी नहीं चलती,
इस हकीकत से रही वो अंजाम,
मगर क्या करती वो भी क्योंकि
इन सपनों में ही तो छुपी
थी उसकी पहचान।
जब भी चाहा उसने जीना
हकीकत के संसार में,
खुद को पाया उनके बीच
जिनसे वो अनजानी थी,
वो बेगाने हो गए जिनके होने से,
उसकी जिंदगी की कहानी थी,
जब भी चाहा उसने अपनों का साथ,
अजनबियों से घिरा पाया
उसने खुद को हर बार,
सपनों में जो चेहरे उसके अपने थे,
दिल के जुड़े गहरे रिश्ते थे,
हकीकत में वो सब उसकी
पहचान से अनजाने थे।
क्या कहें उसके उसके
संघर्ष को जिनसे था
संबंध वो ही उसके अफ्साने थे।
जब जब जुड़ना चाहा उसने अपने अपनों से,
हर बार खुद को अकेला ही पाया।
लोग मिलते गए, पहचान बढ़ती गई,
पर कोई न उसका अपना पाया,
जो दावा किया करते थे दोस्ती का,
उन्होंने भी दुश्मन का फर्ज निभाया।
प्यार के समंदर से जुड़ा,
किनारे पर कश्ती को लगा पर,
हर बार खुद को उसने तन्हा पाया।
एक छोटी सी ख्वाहिश के साथ,
हमेशा खुद को लुटता पाया,
कभी रिश्तों के नाम पर,
कभी काम के आधार
पर जिसने जैसा चाहा,
जिसको जैसा भाया वैसे
उसको छलता आया।
क्या थी उसकी भी कहानी
जहां मौत को भी,
उसपर रहम न आया,
दर्द मिला जीवन भर कर,
फिर भी उसको हमेशा मुस्कुराते पाया,
जमाने ने उसे हर तरफसे आजमाया,
फिर भी कोई उसके हौसलों को तोड़ न पाया,
मौत ने भी ठुकराया दिया जब उसको तब,
उसने भी जीवन के हर संघर्षों में,
अलग अलग रंग भर डाला,
मदमस्त सी जीने लगी फिर से,
जिंदगी को भी फिर उसने
अपनी शर्तों पर नचाया,
जो न कोई कर पाया, ऐसा
कुछ उसने करने की ठानी,
डगर कठिन थी, मुश्किल खड़ी थी पर,
वह भी अपनी जिद की दिवानी थी,
चुनली उसने अपने लिए एक अलग पहचान,
जो उसके नाम से जुड़ी
एक अलौकिक ज्ञानी की थी,
न चुनौतियों से हारी,
न परिस्थितियों से झुकी,
हौसलों की ले उड़ान अब,
वो आसमान पे छानी थी,
ये कहानी है एक बेटी की
जो दुनिया से बैगानी थी
उसकी अपनी अलग कहानी थी।।

डा. पूर्णिमा श्रीवास्तव
जयपुर

बच्चों में बढ़ते अपराधः 'जिम्मेदार कौन'

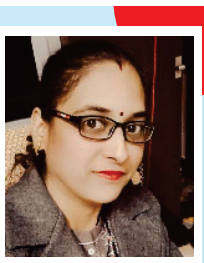

पूजा गुप्ता, मिर्जापुर

बच्चे देश का भविष्य होते हैं क्योंकि वे ही देश को प्रगति और समृद्धि के पथ पर ले जाएंगे लेकिन वर्तमान परिदृश्य में राष्ट्र के निर्माताओं यानी 'बच्चों' के खिलाफ अपराध दर दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। उन्हें जबरदस्ती तस्करी, भीख मांगने जैसे विभिन्न गतिविधियों में शामिल किया जा रहा है, उन्हें सिर्फ पैसे के लिए बेचा जा रहा है और उन्हें मार भी दिया जा रहा है। बच्चों के खिलाफयौन अपराध एक बहुत ही गंभीर अपराध है जो न केवल उन्हें शारीरिक रूप से बल्कि मानसिक रूप से भी प्रभावित करता है। यह लेख यौन अपराधों सहित बच्चों के खिलाफ विभिन्न अपराधों से संबंधित है। यह बेहतर समझ के लिए विभिन्न केस कानूनों पर भी ध्यान केंद्रित करता है। हालांकि हमारे देश के भविष्य की रक्षा के लिए विभिन्न कानून बनाए जा रहे हैं लेकिन फिर भी वे सुरक्षित नहीं हैं, क्योंकि वर्ष 2016-2017 में अपराध दर में 20 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई थी। बच्चों के खिलाफ अपराध को रोकने के लिए वर्तमान कानून पर पुनर्विचार करना समय की मांग है। युगों से बच्चे किसी न किसी दुर्व्यवहार के शिकार होते रहे हैं। हालांकि यह बेहद अविश्वसनीय है कि जहां हम बच्चों को अपने राष्ट्र का भविष्य मानते हैं, वहीं यह कहना गलत नहीं होगा कि उनकी बहुत उपेक्षा की गई है। बच्चों के खिलाफ किए जाने वाले अपराध किसी विशिष्ट लिंग या आयु वर्ग तक सीमित नहीं होते हैं। बच्चों के खिलाफविभिन्न अपराध किए जा रहे हैं, उन्हें या तो बेचा जा रहा है, गुलाम बनाया जा रहा है, उनका शोषण किया जा रहा है, शारीरिक शोषण किया जा रहा है और उन्हें मार भी दिया जाता है। ऐसे कई अपराध हैं जिनका एक बच्चा शिकार होता है। ये अपराध हैं, बाल तस्करी, यौन पर्यटन, अनाचार, बाल बलात्कार, बाल पोर्नोग्राफी, देवदासी प्रथा और वेश्यावृत्ति। हालाँकि, भारत दुनियाँ में दूसरी सबसे बड़ी बाल आबादी वाला देश है और बच्चों की सुरक्षा के लिए कुछ प्रावधान किए जा रहे हैं, लेकिन फिर भी हमारे देश के निर्माता या भविष्य के खिलाफअपराध दर दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। सख्त कानूनों की मदद से इन कृत्यों को रोकने की जरूरत है।

भीख मांगने के लिए बच्चों से जबरन काम लिया जा रहा है। भिखारी के रूप में बच्चों का रोजगार वैश्विक स्तर पर मौजूद है, चाहे देश का आर्थिक परिदृश्य कुछ भी हो। सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि कभी-कभी बच्चे को उसके माता-पिता भीख मांगने के लिए इस्तेमाल करते हैं। भीख मांगने के लिए जो पैसा उन्हें मिला है, वह उन लोगों के पास जाता है, जो बच्चे को कमाई का एक सुविधाजनक स्रोत पाते हैं। बच्चों को नशा देकर जुर्म के शिकार होने वाले बच्चों को कभी-कभी शराब, ड्रग्स, सिगरेट आदि नशीले पदार्थों का सेवन करने के लिए मजबूर किया जाता है ताकि लोगों के लिए यानी रैकेट लीडर को उन्हें नियंत्रित करने में आसानी हो। अपने लालच को पूरा करने

के लिए वे बच्चों को किसी भी तरह के गैरकानूनी काम करने के लिए मजबूर कर सकते हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार, भारत में हर 15 मिनट में एक बच्चे का यौन शोषण होता है। और अपराध दर दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। छेड़छाड़ और बलात्कार वर्तमान में केवल किसी एक लिंग तक ही सीमित नहीं हैं। एक बच्चा चाहे उसका लिंग कुछ भी हो, छेड़छाड़ या बलात्कार जैसे यौन अपराधों का शिकार हो सकता है। इस तरह के अपराध कुछ बाहरी लोगों द्वारा किए जा सकते हैं लेकिन यह परिवार के किसी सदस्य, स्कूल शिक्षक, मित्र, घरेलू सहायक आदि द्वारा भी किए जाते हैं। बच्चों के खिलाफ अपराध में, अपहरण और अपहरण की प्रकृति सबसे अधिक प्रचलित रही। अपराध के कुल 1,29,032 मामलों में करीब 42 फीसदी मामले दर्ज किए जा रहे हैं। इसके अलावा, बच्चों के खिलाफअन्य बड़े अपराधों में यौन अपराधों से बच्चों के संरक्षण (पॉक्सो) अधिनियम का उल्लंघन, बलात्कार, यौन उत्पीड़न और नाबालिग लड़कियों की खरीद-फरोख्त शामिल है। बच्चों पर लगभग 30प्रतिशत शोषण परिवार के सदस्य ही (रिश्तेदार) ही कर रहे हैं। कभी-कभी गरीबी की समस्या के कारण माता-पिता अक्सर अपने ही बच्चों को पैसे के लालच में अपराधी प्रवृत्ति के लोगों के हाथों बेच देते हैं और फिर उन्हें तरह-तरह के अपराधों का सामना करना पड़ता है। हालांकि कानून द्वारा विभिन्न कानून बनाए जा रहे हैं और बच्चों को विभिन्न अधिकार प्रदान किए जा रहे हैं लेकिन फिर भी उनके खिलाफअपराध बढ़ रहे हैं। यह देखा गया है कि बच्चों के खिलाफ इन अपराधों का मुख्य कारण गरीबी और अशिक्षा हो सकता है। जैसा कि उन्होंने दिन के लिए अपना भोजन कमाने के लिए बच्चों के शोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कठोर कानून और आपराधिक न्याय, साथ ही कानून एजेंसियां बच्चों के खिलाफ अपराधों को रोकने के लिए सभी चुनौतियों का सामना कर रही हैं। समाज और समुदाय बच्चों के खिलाफ अपराधों की रोकथाम में एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं, इसलिए नैतिकता और मानवीय मूल्यों को ध्यान में रखते हुए इस सामाजिक बुराई के खिलाफलड़ना भी समाज के सदस्यों का कर्तव्य और जिम्मेदारी है। गरीबी और शिक्षा की कमी के कारण भी माता-पिता अपने बच्चों के अधिकारों के प्रति अनभिज्ञ हैं। इसलिए, उन्हें बाल अधिकारों के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए, इसकी मांग करनी चाहिए और इसके लिए संघर्ष भी करना चाहिए। बच्चों के खिलाफ हिंसा को संबोधित करने के लिए एक राष्ट्रीय, बाल-केंद्रित, एकीकृत, बहु-विषयक और समयबद्ध रणनीति विकसित करने की आवश्यकता है। अब समाज में लोगों के बीच सामाजिक जागरूकता पैदा करने और कानून को बढ़ाने और हिंसा, यौन शोषण और बच्चों के शोषण को समाप्त करने की दिशा में कार्रवाई करने की आवश्यकता है।